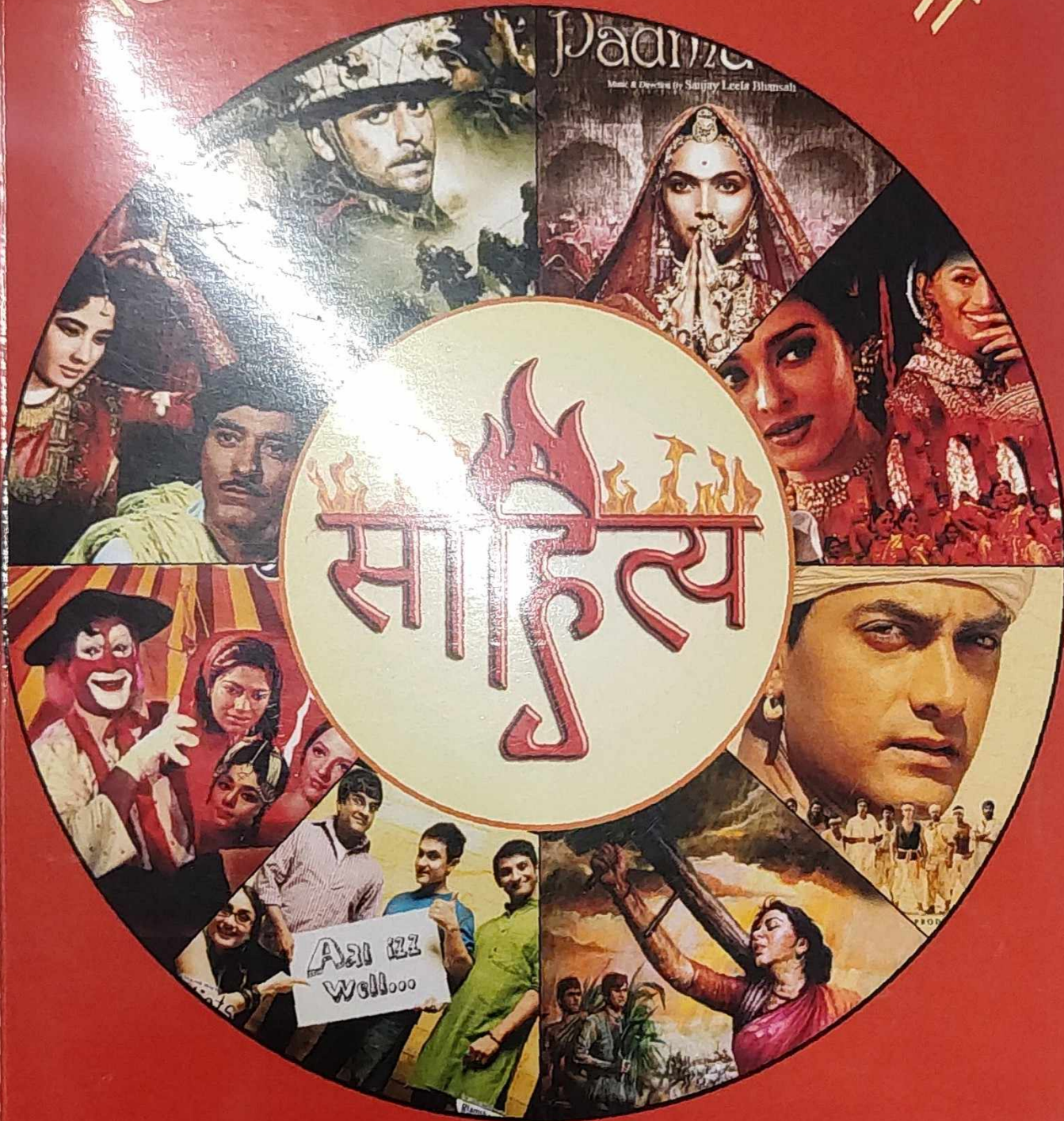


हिन्दी साहित्य और सिनेमा



संपादक
डॉ आर नागेश



ST AGNES COLLEGE(AUTONOMOUS)
MANGALURU

RE-ACCREDITED BY NAAC WITH 'A+' GRADE 2017 (CGPA 3.65/4)

College of Excellence by UGC, New Delhi

Star College Status under DBT, MST, Govt of India



संत आग्नेस कॉलेज (स्वायत्त) मंगलूरु -575 002

हिन्दी साहित्य और सिनेमा

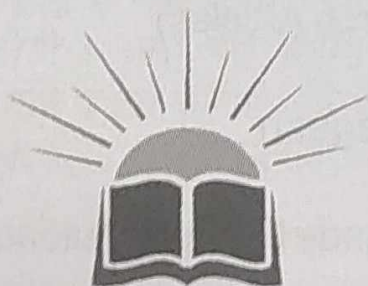
संपादक

डॉ आर नागेश

सह संपादक

डॉ उदय कुमार

डॉ शैलजा हेच.जी



प्रकाशन

संत आग्नेस कॉलेज (स्वायत्त)

मंगलूरु -575 002



प्रकाशक:
संत. आग्नेस कॉलेज (स्वायत्त)
मंगलूरु -575 002

ISBN : 978-81-930869-7-1

प्रथम संस्करण: नवम्बर 2018
आवरण एवं मुद्रण: असिसी प्रेस, मंगलूरु - 575 004
© St Agnes College (Autonomous), Mangaluru

Hindi Sahitya Aur Cinema
(Collection of Research Articles)

Edited by: Dr R. Nagesh

Published by: St Agnes College (Autonomous), Mangaluru

Price: 500/-

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार आदि लेखक के हैं।
अतः संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

42. स्वाति चौधरी, हैदराबाद 245
हिंदी सिनेमा और भाषा के बदलते संदर्भ
43. तस्लीमा, मंगलूरु 254
हिंदी सिनेमा का सामाजिक सरोकार
44. डॉ. पी.वी. शोभा, मंगलूरु 258
हिंदी सिनेमा का सामाजिक सरोकार
45. वंदना शर्मा, शोधार्थी-हैदराबाद 264
हिंदी सिनेमा: भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में
46. डॉ. जीतेंद्र प्रताप, मुडिपु 270
ग्लोबल होती दुनिया में हिंदी के वर्चस्व को बढ़ाता हिंदी सिनेमा
47. डॉ. पूर्णिमा आर, पेरुंबावूर, केरल 276
हिंदी सिनेमा पर वैश्वीकरण का प्रभाव
48. डॉ. मधुमालाती जी. एस., दावनगेरे 283
हिंदी सिनेमा में नारी की विविध पहलु
49. विद्या कुमारी चन्दा, वाराणासी 289
हिंदी साहित्य और सिनेमा
50. डॉ. अमिता, मंगलूरु 293
हिंदी सिनेमा जगत में नारी के विभिन्न रूप
51. अमित कुमार गुप्ता, आगरा 297
भारतीय सिनेमा में नारी की संस्कृति व योगदान
52. प्रो इन्दुमति एस, बेंगलूरु 301
हिंदी सिनेमा का सामाजिक सरोकार
53. प्रो एन शान्ति कोकिला, बेंगलूरु 307
नारी और सिनेमा
54. डॉ. तलवार रामकृष्ण, दावणगेरे 313
“हिंदी प्रचार-प्रसार में सिनेमा की भूमिका”
55. डॉ. चेतन बणकार, हरपनहल्ली 317
‘हिंदी सिनेमा, संस्कृति और नारी’
56. डॉ. दुर्गारत्ना. सि., पुत्तुरु 321
हिंदी सिनेमा के प्रदीप्त कवि प्रदीप

हिन्दी सिनेमा में नारी की विविध पहलु

Dr. MADHUMALATHI G. S.

Asst. Professor,

A.R.M.F.G. College

S. N. Layout,

Davanagere-04

आधुनिक मनोरंजन के साधनों में फोटो, कैमरा, का महत्व अधिक है। आज विज्ञान का युग है। मनुष्य ने अपनी बढ़ती हुई इच्छाओं के कारण तकनीक को प्राप्त कर लिया है। इस तकनीक द्वारा उसने अपने जीवन की विभिन्न प्रकार के इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के साधन भी अपनाएँ हैं। मनुष्य इन साधनों के द्वारा अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक भाग किसी-न-किसी से पूरा किया जाता है। आधुनिक मनोरंजन के साधनों से मनुष्य ने फोटो, कैमरा, टेलिफोन, टेलिविजन, टेपरिकार्ड, खेल-सिनेमा अवगमन के विभिन्न साधनों को प्राप्त कर लिया है।

भारतीय सिनेमा में शुरू से ही दो धाराएँ चली आ रही हैं : एक व्यावसायिक सिनेमा की जिसके लिए सब कुछ एक व्यापार है तो वही दूसरी ओर समान्तर सिनेमा की धारा थी जो सामाजिक मुद्दों को सिनेमा के माध्यम से लोगों के सामने ला रही है। हिन्दी सिनेमा में अब तक नारी की जो तस्वीर पेश की है, वह वही है जिसके आदर्श धार्मिक पुस्तकों में मिलते हैं और जो प्रायः पूंजीवादी समाज में नारी के वास्तविक स्थिति का प्रतिबिम्ब है। इसके अनुसार नारी जीवन की इसके अलावा और सार्थकता नहीं है कि वह अपने पति और बच्चों के लिए जीए। अपनी दैहिक पवित्रता की रक्षा करे और हर तरह से अपने पति के प्रति एकनिष्ठ रहे। कोई ऐसा कदम न उठाये जिससे कि

घर की इज्जत पर आँच आए। जो नारी इन जीवन मूल्यों को स्वीकार नहीं करती उन्हें हिन्दी फिल्मों में खलनायिका बनाकर पेश किया जाता है। नारी के वही रूप हिन्दी सिनेमा को स्वीकार्य रहे हैं और इसका समसामयिक नारी वार्थ से कोई संबंध नहीं है।

एक ओर सिनेमा ने जहाँ नारी चरित्रों को सामाजिक परिवर्तन में नया रूप दिखाया है वहीं पर दूसरी ओर औरत को एक उत्पाद के रूप में भी पेश किया है। जहाँ वह सिर्फ बाजार के प्रमोटर के रूप में माडल बनकर रह गई। सिनेमा का प्रभाव अत्यंत व्यापक और अधिक तीव्र होता है, जो व्यक्ति के मानसिक स्तर को झकझोरता है। आज बदलते परिवेश में सिनेमा में सिनेमा में स्त्री का चरित्र बदला है। वह एक माडल के रूप में किसी वस्तु या उत्पाद को अधनंगे कपड़ों में पेश करती दिखाई देती है। फिर भी पहले की स्थिति से आज की स्थिति भिन्न है इसका श्रेय कुछ हद तक सिनेमा को दिया जाता है।

पुरुषवादी सत्ता हर साल में नारी पर अपना प्रभुत्व चाहती है यही वजह है कि उसे एक कैद से मुक्त कर दूसरे कैद में डाल देना चाहती है। आज जिस तरह से फिल्मों में नारी के अंगों की नुमाइश हो रही है वो उसे एक और कैद में कैद करनी की ही कोशिश है।

सिनेमा में नारी तीसरे दशक के बाद से ही निर्देशन, संगीत, लेखन, आदि के क्षेत्र में दिखाई देने लगती है। "मदर इंडिया" "प्यासा" "कागज के फूल" और "मधुमति" जैसी फिल्मों ने यह साबित किया कि किस तरह स्त्री अपने रूप को जीती है— किस तरह वह खुश रहती है— उसका हृदय क्या कहता है— और किस तरह वह परिवार को देखते हुए कहाँ पहुँचना और रहना चाहती है— पिछले एक दशक में भारतीय सिनेमा में नारी को लेकर दृष्टिगत बदलाव आया है। नारी के संवेदनाओं को उजागर करती है। लगभग सौ साल के इतहास में लगातार फिल्में बनती रही हैं, जिसमें स्त्री जीवन के यथार्थ को कलात्मक उत्कर्षता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री लगभग तीसरे दशक के बाद से ही सिनेमा के निर्देशन,

संगीत, लेखन के क्षेत्र में नजर आने लगी। जिसके कोशिश के कारण आज स्त्री की सिनेमाओं में भागीदारी बड़ी और बड़ी-बड़ी फिल्मकारों का नाम जुड़ गया जिसमें अपर्णा सेन, कल्पना लाजमी, मीरा नायर, दिया मेहता, तनुजा चन्द्रा, फगह खान, पूजा भट्ट, आदि हैं। जिन्होंने नारी प्रधान समस्याओं को उभरा, उनकी बारीकी तक पहुँची पर इसके बावजूद जन सामान्य नारी की वेदना को वह नारी ही दिखा सकती है। फिल्मों में नारी जीवन से संबंधित जिन समस्याओं को उजागर किया गया उनमें "कल-विवाह" "पर्दा प्रथा" "आशिका" आदि थे। सिनेमा में स्वतंत्रता प्राप्ति यानी सन 1947 के बाद परिवर्तन आया।

भारत की पहली फीचर फिल्म का निर्माण दादा साहेब फाल्के द्वारा किया गया था। दादा साहेब भारतीय सिनेमा के "अगुआ" थे। भारतीय सिनेमा अपने प्रारंभिक दौर से लेकर आज तक कई दर्रे पर चलता दिखाई देता है। आज की हिन्दी सिनेमा ने तमाम तरह की पुरानी रूढ़ियों को तोड़ा है। अपने समय की नब्ज को पहचानते हुए उसे प्रोत्साहित किया है और अपने लिए दर्शक तैयार किये हैं। विषय, भाषा-चरित्र, प्रस्तुति आदि सभी स्तरों पर भारतीय सिनेमा अपनी पुरानी छवी को छोड़ नयी जमीन तैयार कर रहा है जिस औरत को सिनेमा ने अपने शुरुवात की दौर में अबला के रूप में प्रस्तुत किया था। आज वही अबला मुख्य भूमिका में आ गयी है। आजादी के 72 (बहतर) सालों के बाद भी हम पाते हैं कि एक समता मूलक समाज बनाने में भारत की प्रगति धीमी और निराशाजनक है। महिलाओं के प्रति भेद-भाव भूल रहा है और धर्म जाती, अमीर, गरीब, शहरी-ग्रामीण विभाजकों में समान रूप में मौजूद है। भारतीय समाज में आज भी नारी को लेकर असमंजस की स्थिति है।

स्त्री को पौराणिक चरित्रों से बाहर निकालकर उसे नए चरित्र में डालने का कार्य सिनेमा ने किया है और इस क्षेत्र में और भी काम करने की जरूरत है। स्त्री की नए जीवन के उल्लास को और बितायें पलों को समेट पर्दे पर जिंदगी जीने की हमेशा कोशिश की है, इन्हीं कोशिशों में सिनेमा ने ममता की महिमा, भावनात्मक वहन, प्यारी

पत्नी और जीवन को निछावर कर देनेवाली स्त्री के चरित्र को चित्रित किया है। जहाँ वे कृत्य होती है, टूटती है, निखरती है और कभी संघर्ष के लिए खड़ी हो जाती है: ऐसी है हमारी हिन्दी सिनेमा की नारी। जिसके प्रभाव के कारण आज स्त्री की सिनेमाओं में भागीदारी बढ़ी। सलवार-सूट या साड़ी पहने घर में चौका-करी करनेवाली सामान्य सी औरत एक नए रूप में सामने आती है। समाज के हर क्षेत्र में अपनी जगह बनाने के साथ-साथ उन सारी चुनौतियों का सामना भी किया, जिसका पुरुष वर्ग करते है वह आफिस और घर में बराबर समय देती है। इसमें अपने आगे बढ़ते करियर, साथ में देश और समाज भी उसके लिए मायने रखते है। जहाँ पर अपने लिए ही नहीं बल्की देश और समाज का नाम भी ऊँचा करना चाहती है। आज समाज में खुलापन आया जिसमें समाज में मौलिकता और मटीरियल वैल्यू की बढ़ोत्तरी हुई है।

सिनेमा ने नारी चरित्रों को समाज परिवर्तन में नया रूप दिया पर दूसरी ओर औरत को एक उत्पादकता के रूप में भी पेश किया जा रहा है। कम्पनी अपना प्राडक्ट फिल्म में स्पोंन्सर्ड करवाती है, वह भी नारी पात्रों से क्योंकि वह भावनात्मक स्तर पर दूसरी नारी से जुडी होती है। इस तरह आज जो समाज में फैशन और कपडों के प्रति जो मानसिक बदलाव आया है वह कहीं न कहीं सिनेमा से प्रभावित है जिसने औरतों या स्त्री को उत्पाद बना के रख दिया है। उसे उस उत्पाद का माडल बनाया जाता है जिसकी बिक्री करनी होती है। जिसमें न नारी संवेदना है, न पीडा है, न ही उसकी सामाजिकता। वह सिर्फ उत्पाद है और मुनाफा। सिनेमा कहीं न कहीं जीवन से जुडा होता है। आज भी समाज में स्त्री को लेकर अनेक कुरीतियाँ है, जिसका चित्रण कर फिल्म समाज में नये मानक की स्थापना करें। सिनेमा ने नए रूप में उत्पाद का चित्रण कर स्त्री को उपयोगवादी बनादिया है। जहाँ वस्तुओं का प्रचार भी वही करती है और उसका उपयोग भी वही करती है। सिनेमा को अपने वर्चस्व में कर लिया वही इनमें स्त्री-पुरुष (मानवीय) संबंधों

में तनाव पैदा किया है। स्त्री की तुलना विभिन्न उपयोग की वस्तु से कर उसके उपयोग की वस्तु ही बना देना है।

हिन्दी सिनेमा में स्त्रीयों को लेकर विभिन्न पर्व त्योहारों पर खरीदारी करते नई-नई उपयोग की वस्तु खरीदते और उसे अच्छा बताते दिखाया जाता है जिसका समाज के स्त्रीयों पर प्रभाव पडता है और वह उन वस्तुओं को भी अपनाना शुरू कर देती है।

सिनेमा में शुरुवात से लेकर अब तक नारी के कई चित्र उभरकर आते है। जिसमें माँ, बहन, पत्नी, कार्यकर्ता आदि के रूप में दिखती है। यहाँ वह सशक्त लडती हुई दिखाई पडती है तो कहीं वह आसमान छू लेना चाहती है। कहीं अबला भी प्रतीत होती है। इन सभी चरित्रों को उभरती आज हिन्दी सिनेमा की स्त्री विश्वस्तर पर जानी जाती है। इसलिए आज भी फिल्मों में स्तरीय बदलाव की आवश्यकता है जिससे जीवन की सोच जितनी अनंत है और उससे आगे बढ़कर स्त्री जीवन को नयी दृष्टी प्रदान करे। जहाँ वह अपनी इच्छा से नौकरि से लेकर शादी के लिए लडके तक का चुनाव कर सके। वह अपनी पहचान समाज में प्रतिष्ठित रूप में व्याख्यायित करें। जीवन और जगत में संतुलन के साथ-साथ व्यवसाय से लेकर नौकरी और घर तक आत्म निर्भर बनी रहेंगी।

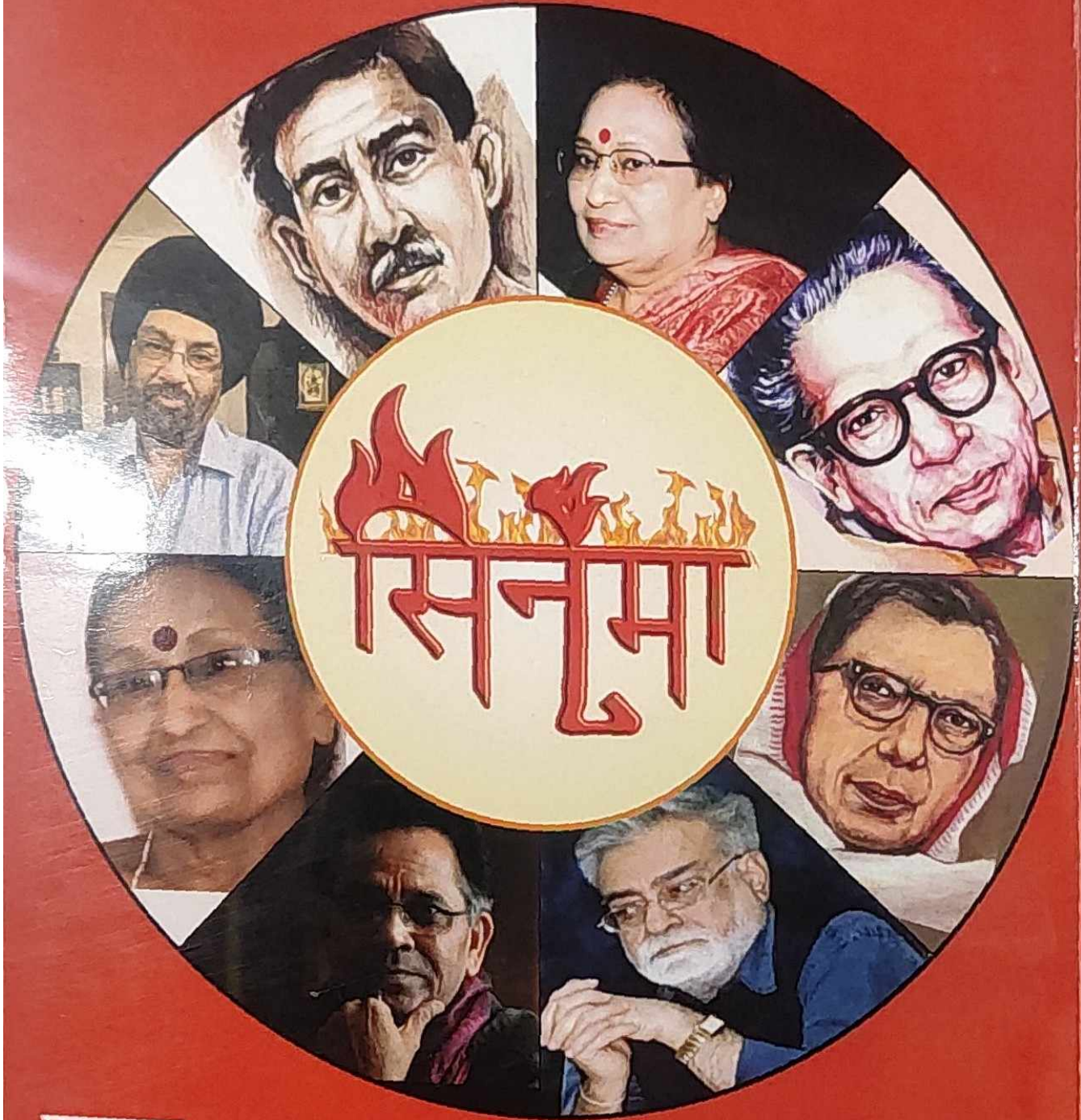
उपसंहार: आज विज्ञान का युग है। मनुष्य ने अपनी बढ़ती हुई इच्छाओं के कारण तकनीक को प्राप्त कर लिया है। इस तकनीक द्वारा उसने अपने जीवन की विभिन्न प्रकार की इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के साधन भी अपनाएँ है। मनुष्य इन साधनों के द्वारा अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक भाग किसी-न-किसी से पूरा किया जाता है।

संचार के सबसे सशक्त माध्यम के तौर पर फिल्म का प्रभाव जनता पर सबसे अधिक पडता है। इसमें पढे-लिखे लोगों से लेकर गरीब जनता तक सम्मिलित है। क्योंकि यह दृश्य-श्राव्य माध्यम है। हिन्दी सिनेमा का आरंभ वैसे तो 1931 में आर्देषिर ईरानी द्वारा निर्देशित फिल्म

“आलम आरा” से होती है जिसको भारत की पहली सवाक फिल्म होने का गौरव प्राप्त है। वैसे भारत में सिनेमा 1896 में बंबई के वास्टन होटल में प्रदर्शित लूमेर भाइयों के मूल फिल्मों से होती है।

आज की हिन्दी सिनेमा ने तमाम तरह की पुरानी रूढ़ियों को तोड़ा है। अपने समय की नब्ज को पहचानते हुए उसे प्रोत्साहित किया है और अपने लिए दर्शक तैयार किये हैं। विषय, भाषा, चरित्र, प्रस्तुति, आदी सभी स्तरों पर। पहले की फिल्में स्त्री जीवन की मुश्किलों और विडंबनाओं को व्यक्त करते हुए उनके साथ बराबरी और अधिक और सुनियोजित व्यवहार कर घरबल देती थी। जबकी इसके बाद जो फिल्में बनाने लगी उसमें साफ-साफ स्त्री सबलीकरण पर भी बल दिया गया है। इन फिल्मों में स्त्री जीवन के कुछ जो की शायद इस तरह से इससे पहले इतने तीखे रूप में नहीं उठाया गया है। इसमें उच्च वर्णीय हिन्दू है तो दलित स्त्री भी है और धार्मिक अल्पसंख्यात भी है।





प्रकाशक:

संत आग्नेस कॉलेज (स्वायत्त)

मंगलूरु-575002

ISBN : 978-81-930869-7-1

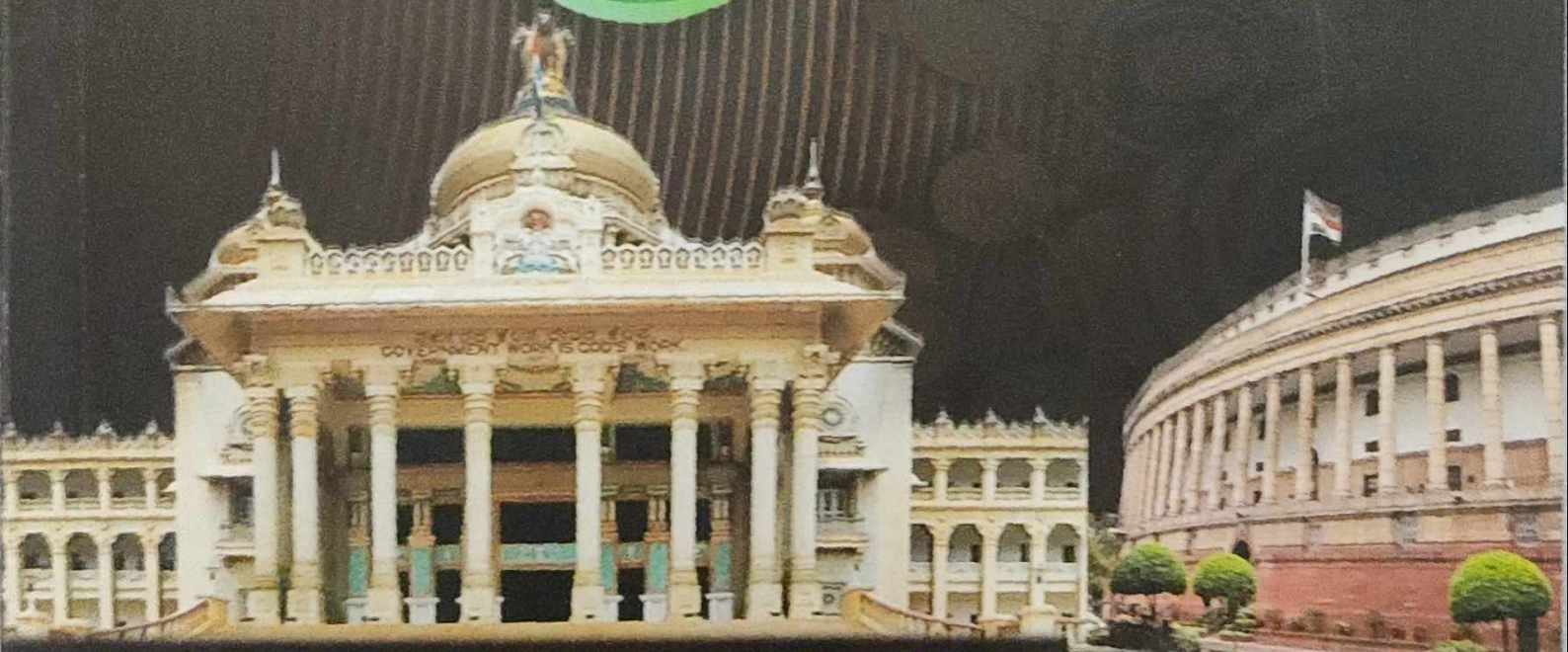


9 788193 086971

Volume-XVII

February-2018

KARNATAKA JOURNAL OF POLITICS



Published by : ICSSR–New Delhi,

Davangere University Colleges' Political Science Teachers' Forum,

SBC First Grade College for Women & Athani P.G. Centre,

ARM First Grade College & P.G. Centre

on behalf of

KARNATAKA STATE POLITICAL SCIENCE TEACHERS' ASSOCIATION (R)

KARNATAKA JOURNAL OF POLITICS

EDITORIAL BOARD

Editor Chief :
Prof. S.A. Javeed

Members :

Dr. Chidananda R.G.
Prof. M.R. Halasangi
Dr. Ashokkumar V. Paled
Dr. M.G. Khan
Dr. Chandrashekar K.
Dr. P.L. Dharma

Dr. Ratnakara B.M.
Dr. N.M. Sali
Dr. Smt. K.G. Tadasad
Dr. G.T. Ramachandrappa
Dr. D.L. Chabnur
Prof. Vishmanatha K.

Published by :

KARNATAKA STATE POLITICAL SCIENCE TEACHERS' ASSOCIATION (R)

ICSSR -New Delhi

Davangere University Colleges'
Political Science Teachers' Forum,

SBC First Grade College for Women & Athani P.G. Centre,
ARM First Grade College & P.G. Centre

KARNATAKA JOURNAL OF POLITICS

Vol. No. XVII

Published by :

ICSSR -New Delhi

Davangere University Colleges' Political Science Teachers' Forum,

SBC First Grade College for Women & Athani P.G. Centre,

ARM First Grade College & P.G. Centre

On behalf of :

Karnataka State Political Science Teachers' Association (R)

Chief Editor : Prof. S.A. Javeed

Professor of Political Science

Kuvempu University, Shankar Gatta

Shimoga

Page No. : VIII + 224

February 2018

ISBN No. : 978-81-925462-2-3

@All Rights are reserved,

The views expressed in the articles are those and they are not the opinions of Karnataka

State Political Science Teachers' Association or those

Davangere University Colleges' Political Science Teachers' Forum,

SBC First Grade College for Women & Athani P.G. Centre,

ARM First Grade College & P.G. Centre Editorial Board is not responsible for them.

Printed at : NISHANTH Printers,

Near Vasantha Talkies, DAVANGERE. M. 9880827956



ಎಲ್ಲರಿಗೂ ನಮಸ್ಕಾರಗಳು,

ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಕುರಿತಂತೆ ಚಿಂತನೆಗಳು, ಸಿದ್ಧಾಂತಗಳು ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲಘಟ್ಟಗಳಲ್ಲಿಯೂ ನಿರಂತರವಾಗಿ ರೂಪಗೊಳ್ಳುತ್ತಾ ಬಂದಿವೆ. ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯು ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕತೆಯಿಂದ ಆಧುನಿಕತ್ವ ನಿಲುವುಗಳನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾ ಪರಿವರ್ತನೆಯಡೆಗೆ ಹಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು ಸಹಜ. ದೇಶದ, ವಿಶ್ವದ ರಾಜಕೀಯ ನಿರ್ಧಾರಗಳು ಒಂದು ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಪರಿವರ್ತಿಸಿರುವುದು ಇತಿಹಾಸದ ಪುಟಗಳಿಂದ ತಿಳಿದು ಬರುತ್ತದೆ. ರಾಜಕೀಯ ಕುರಿತ ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಅಧ್ಯಯನ, ಶೋಧನೆ-ಸಂಶೋಧನೆಗಳು-ಸಂಪಾದಗಳು, ಚರ್ಚೆಗಳು, ಒಂದು ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಜೀವಂತಿಕೆಯ ಪರಿವರ್ತನೆಗೆ ಸಹಕಾರಿಯಾಗುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಪ್ರಸ್ತುತೆಯನ್ನು ಹೊಂದಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾಗಿ ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಅಧ್ಯಾಪಕರ ಸಂಘವು ಹಲವಾರು ಕ್ರಿಯಾಶೀಲ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಿಗೆ ವೇದಿಕೆಯಾಗಿದೆ. ರಾಜ್ಯದ ಅಧ್ಯಾಪಕರುಗಳ ವಿಷಯದ ಬಗ್ಗೆ ಹೊಂದಿರುವ ಕಾಳಜಿ ಇಂತಹ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಿಗೆ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲತೆಗೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿದೆ. ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದ ಅಧ್ಯಯನದ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲತೆಯ ಕಾಳಜಿ, ಪ್ರಸ್ತುತತೆಯ ಮಹತ್ವವನ್ನರಿತ ಅಧ್ಯಾಪಕರುಗಳು ಸಂಘದ ಸ್ಥಾಪನೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ಅಧ್ಯಾಪಕರುಗಳು, ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದ ವಿದ್ವಾಂಸರು ತಜ್ಞ ಅಧ್ಯಾಪಕರು ಹಾಗೂ ಸಂಶೋಧನೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಸಂಶೋಧನಾ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳ ಮೂಲಕ ಕಂಡುಕೊಂಡ ಚಿಂತನೆಗಳ ರೂಪವೇ “ KARNATAKA JOURNAL OF POLITICS ” ಎಂಬ ಪ್ರಸ್ತುತ ಸಂಚಿಕೆಯು ಗುಣಾತ್ಮಕ ಲೇಖನಗಳನ್ನು ಸಾಧ್ಯವಾದಷ್ಟು ಶೋಧಿಸಿ ಪ್ರಕಟಿಸಿದೆ.

ಅನೇಕ ಹಿರಿಯರು ಸಂಘವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಮುನ್ನಡೆಸುತ್ತಾ ಬಂದಿದ್ದು, ಕಳೆದ ವರ್ಷ ಸಂಘದ ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ಹಲವು ಹಿರಿಯ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕ ಮಿತ್ರರು ನನ್ನ ಹೆಗಲಿಗೇರಿಸಿದರು. ಇದೊಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಜಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ತಂದೆಯ ಹೆಗಲ ಮೇಲೆ ಕುಳಿತು ತೇರನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾ ವಾಸ್ತವವನ್ನರಿಯದ ತಾನು ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತ ಎತ್ತರದಲ್ಲಿದ್ದೇವೆಂದು ಪರಿಭಾವಿಸಿದ್ದ ಮಗುವಿನಂತೆ ನನ್ನನ್ನು ಕುರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಹಿರಿ-ಕಿರಿಯರ ಸಲಹೆ, ಮಾರ್ಗದರ್ಶನದಂತೆ ಸಾಗುತ್ತಾ ಪ್ರಸ್ತುತ ಸಮ್ಮೇಳನದ ರೂಪ ಪಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ನನ್ನ ಜೊತೆಗೆ ದಾವಣಗೆರೆ ನಗರದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಎಸ್.ಬಿ.ಸಿ. ಕಾಲೇಜಿನ ಪ್ರೊ. ಕೆ. ವಿಶ್ವನಾಥರವರು ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿಯಾಗಿ ಆಯ್ಕೆಯಾಗುವುದರ ಮೂಲಕ ನನ್ನ ಜೊತೆಗೆ ಹೆಗಲಿಗೆ ಹೆಗಲು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ.

ಅಧ್ಯಕ್ಷನಾಗಿ ಆಯ್ಕೆಯಾದ ನಂತರ ಮೊದಲು ದಾವಣಗೆರೆಯ ಎಸ್.ಬಿ.ಸಿ. ಮಹಿಳಾ ಕಾಲೇಜು ಮತ್ತು ಅಥಣಿ ಸ್ನಾತಕೋತ್ತರ ಕೇಂದ್ರದ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರಾದ ಡಾ. ಕೆ. ಷಣ್ಮುಖರವರನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿದೆ. ಅವರು ಸಂಶೋಧನೆಯ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿ ಆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸಮ್ಮೇಳನವನ್ನು ನಡೆಸುವ ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆ ನನ್ನ ಮೇಲಿದೆ ಎಂದು, ಹೇಳಿ ಹಾಗೂ ಇದಕ್ಕೆ ಸಹಕಾರ ನೀಡಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡಾಗ ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ಸಹಕಾರ ನೀಡಲಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳಿ ನನ್ನನ್ನು ಹುರಿದುಂಬಿಸಿ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಸಿದ್ಧತೆಯ ಮುಖಿಯಾಗಲು ಶ್ರೀಯುತರ ಕಾರಣವೆಂಬುದನ್ನು ಪ್ರಸ್ತುತವಾಗಿ ಸ್ಮರಿಸಲೇಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಡಾ. ಕೆ. ಷಣ್ಮುಖರವರ ಸಿದ್ಧತೆ, ಬದ್ಧತೆ ಮತ್ತು ಪ್ರಭುದ್ಧತೆಯೇ ಸಮ್ಮೇಳನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿದೆ.

ಸಮ್ಮೇಳನಕ್ಕೆ ಬೆನ್ನಲುಬಾಗಿ ನಿಂತವರು ಪ್ರೊ. ಸಿ.ಹೆಚ್. ಮುರಿಗೇಂದ್ರಪ್ಪನವರು ಶಿಕ್ಷಕರಿಗೆ, ಶಿಕ್ಷಣ ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ಇವರ ಕೊಡುಗೆ ಅನನ್ಯ... ಹೋರಾಟದ ಮೂಲಕವೇ ಶಿಕ್ಷಣ ಕ್ಷೇತ್ರದ ದೋಷಗಳನ್ನು ತಿದ್ದಿದವರು. ಸೆನೆಟ್, ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ ಸದಸ್ಯರಾಗಿ ವಿವಿಧ ಸಂಘ ಸಂಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟು ದುಡಿದ ಶ್ರೀಯುತರು ದಾವಣಗೆರೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಭಾರಿ ನಡೆಯಲಿರುವ ನಮ್ಮ ಸಮ್ಮೇಳನದ ರೂವಾರಿ. ಈ ಮೂಲಕ ಶಿಲ್ಪಿಗಳಂತೆ ನಮ್ಮನ್ನು ಕೆತ್ತಿ ಮೂರ್ತಿಯಾಗಿಸಿ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಇವರ ಕೊಡುಗೆ ಅನುಕರಣೀಯ.

ನನ್ನ ವಿದ್ಯಾಗುರುಗಳಾದ ಡಾ. ಹರೀಶ್‌ರಾಮಸ್ವಾಮಿಯವರ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನವೇ ನನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲತೆಗೆ ಸ್ಪೂರ್ತಿ ಹಾಗೂ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಯಶಸ್ಸಿನ ಹಿಂದೆ ನಮ್ಮ ಕಾಲೇಜಿನ ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರಾದ ಪ್ರೊ. ಡಿ.ಹೆಚ್. ಪ್ಯಾಟಿಯವರು ನನಗೆ ಎಲ್ಲ ವಿಧದಿಂದಲೂ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಿ ಹಾಗೂ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ನೀಡಿದ ಇವರ ಸೇವೆಯನ್ನು ನಾನೆಂದು ಮರೆಯಲಾರೆ.

ಸಮ್ಮೇಳನದ ಯಶಸ್ಸಿನ ಹಿಂದೆ ದಾವಣಗೆರೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ಕಾಲೇಜುಗಳ ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಅಧ್ಯಾಪಕರ ವೇದಿಕೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷರು, ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕ ಮಿತ್ರರಾದ ಪ್ರೊ. ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಹಲಸಂಗಿ, ಡಾ. ಚಿದಾನಂದ ಆರ್. ಜಿ. ಇವರುಗಳು ಈ ಸಂಚಿಕೆಯನ್ನು ಹೊರತರಲು ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ನಿರ್ವಹಿಸುವುದರ ಜೊತೆಗೆ, ಸಮ್ಮೇಳನಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲ ವಿಧದ ಸಹಕಾರವನ್ನು ನೀಡಿದ್ದು ಅವಿಸ್ಮರಣೀಯ.

ಎಸ್.ಬಿ.ಸಿ. ಕಾಲೇಜಿನ ಪ್ರೊ. ಕೆ.ಎಂ. ಮಂಜುನಾಥ (ಶ್ಯಾಲೆ), ಪ್ರೊ. ಎಂ.ಹೆಚ್. ಪ್ರಸನ್ನರಡ್ಡಿ, ಶ್ರೀ ಚಮನ್‌ಸಾಬ್, ಡಾ. ಶ್ರೀಮತಿ ಭಾಗ್ಯಶ್ರೀ ಹುಬ್ಳಿಕರ್, ಪ್ರೊ. ಶ್ರೀಮತಿ ಛಾಯಾ ಹರವಿ, ಪ್ರೊ. ಶ್ರೀಮತಿ ಸೌಮ್ಯ ಇವರುಗಳು ಹಾಗೂ ನಮ್ಮ ಎ.ಆರ್.ಎಂ. ಕಾಲೇಜಿನ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕ ಮಿತ್ರರಾದ ಪ್ರೊ. ಎಂ.ಡಿ. ಅಣ್ಣಯ್ಯ, ಪ್ರೊ. ನಾಗರಾಜು ಜಿ., ಪ್ರೊ. ಕಾಡಜ್ಜಿ ಶಿವಪ್ಪ, ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ. ಇವರುಗಳ ಸೇವೆಯನ್ನು ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರು ಕಡಿಮೆಯೇ ಎಂದು ಭಾವಿಸುತ್ತೇನೆ ಹಾಗೂ ಎರಡೂ ಕಾಲೇಜಿನ ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿಯವರು ಮತ್ತು ಎರಡೂ ಕಾಲೇಜಿನ ಭೋದಕ-ಭೋಧಕೇತರ ವರ್ಗದವರನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಲೇಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ಈ ಸ್ಮರಣ ಸಂಚಿಕೆಯನ್ನು ಅಂದವಾಗಿ ಸರಿಯಾದ ಸಮಯಕ್ಕೆ ಮುದ್ರಿಸಿದ ಮುದ್ರಣಕಾರರಾದ ನಿಶಾಂತ್ ಪ್ರಿಂಟರ್ಸ್‌ನ ಮಾಲೀಕರಾದ ಬಿ.ಪಿ. ಮಂಜುನಾಥ ದಾವಣಗೆರೆ ಇವರನ್ನು ಸಹ ನೆನೆಯದೇ ಇರಲಾರೆ.

“ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವದ ಅನುಭವ ಮಾದರಿಗೆ ಭಾರತದ ಅನುಭವ ಅಪಾರ
ಅದಕ್ಕೆ ಅನುಭವ ಮಂಟಪವೇ ಆಧಾರ”

ಡಾ. ಅಶೋಕ್‌ಕುಮಾರ್ ಎಲ್. ಪಾಳೇದ

ಅಧ್ಯಕ್ಷರು,

ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಅಧ್ಯಾಪಕರ ಸಂಘ (ರಿ).

VI
17TH STATE LEVEL POLITICAL SCIENCE TEACHERS'
CONFERENCE, DAVANGERE

17th and 18th of February 2018.

Theme of the Conference

"DEMOCRACY : THE INDIAN EXPERIENCE"

Sub Themes :

I. Civil Society: Realisation of Democratic Project (Vision).

- 1) Civil society engagement in the democratic process.
- 2) Political culture and constructive political participation.
- 3) Role of Quality education and the teachers in creating enlightened society.
- 4) Freedom of expression and space for intellectual discourse.
- 5) Plural and secular dimensions of "Nationalism".

II. Challenges before Indian Democracy.

- 1) Caste system: The politics of Caste.
- 2) Communalism and rising radicalism.
- 3) Corruption and criminalisation of politics.
- 4) Laxity in the system of rule of law.
- 5) Feudal and dynastic mind-set of politicians.
- 6) Declining standards in parliamentary debates.

III. Reinforcing Indian Democracy.

- 1) Rectification of gap between political democracy and social and economic democracy.
- 2) Effective democratic decentralisation.
- 3) Good governance.
- 4) Integrity in civil service.
- 5) Judicial activism.
- 6) Inclusive growth: Health, Education and development dimensions.
- 7) Science, humanity and democracy: Triple tenets to make India a strong nation.

VII

CONTENTS

Sl. No.	Title of Paper	Page No.
1	Judicial Activism in India Prof. K. Chandrashekhar.	1 - 4
2	Reinforcing Indian Democracy: Rectification of gap between political democracy and social and economic democracies. Prof. Mallikarjun R Halasangi,	5 - 6
3	Good Governance And E-Governance - A Challenge For India Dr. Kamalaxi Tadssad	7 - 12
4	CONCEPT EVOLUTION AND SIGNIFICANCE OF DEMOCRATIC DECENTRALISATION. Dr. Ashokkumar V.Paled	13 - 16
5	E-GOVERNANCE : AN INITIATIVE TO REINFORCE DEMOCRATIC POLITY IN INDIA. Vishwanatha K.	17 - 23
6	ROLE OF A CITIZEN IN INDIAN DEMOCRACY DR. SOMASHEKARAPPA . C S	24 - 26
7	JUDICIAL ACTIVISM IN INDIA Prof. Rangaswamy. K.	27 - 29
8	EMPOWERMENT OF WOMEN AND MEDIA IN INDIA Gangadhar Bhat	30 - 33
9	DEMOCRACY AND NEW CHALLENGES Chandrakumar S	34 - 38
10	PEOPLE PARTICIPATION TOWARDS GOOD GOVERNANCE IN INDIAN DEMOCRACY CONTEXT Dr. Prakash S.Kattimani	39 - 42
11	CONCEPT OF JUDICIAL ACTIVISM IN INDIA Smt. Shailaja. A.S.	43 - 45
12	POLITICAL CULTURE AND POLITICAL PARTICIPATION. Prof. Siddaiah.S.V.	46 - 48
13	THE PROBLEMS AND ISSUES OF URBANISATION IN INDIA Dr. Satyanarayn	49 - 53
14	ROLE OF POLITICAL IDEOLOGY: STRUGGLE FOR INTELLECTUAL DISCOURSE Dr. Praveena T. L.,	54 - 57
15	PARADIGM OF GOOD GOVERNANCE Dr.Ashok.S.Anikivi. Mr.Suneet.S.Mudalgi	58 - 62
16	GOOD GOVERNANCE Dr. Raghavendra D. Deskar	63 - 64
17	SCHOLARLY AND SCIENTIFIC INFORMATION AS OXYGEN FOR INDIAN DEMOCRACY: GOOD GOVERNANCE THROUGH RTI ACT IN INDIA Dr. I. R. Kajagar Dr. M. Anjaiah	65 - 70
18	EMERGING TRENDS IN INDIAN POLITICS: AN OVERVIEW Vijayakumar.B Dr. Honnur Ali. I	71 - 74
19	CHALLENGES BEFORE INDIAN DEMOCRACY Dr. Sunanda S Shirur, Prof. Sanjay A Shettar	75 - 77
20	CORRUPTION AND CRIMINALISATION OF POLITICS Prof. Manjula H. Pujar, Dr. Mahadevappa Dalapati,	78 - 80
21	THE POLITICS OF CASTE IN INDIA: THE CASTE MAFIA AND 2018 ASSEMBLY ELECTION IN KARNATAKA Dr JAYAKUMAR H. M.A., PhD	81 - 87
22	CIVIL SOCIETY AND DEMOCRACY Jagadish B. Gouda	88 - 90
23	POLITICS: A NEW ROAD AHEAD TOWARDS INCLUSIVE DEMOCRACY AND DEVELOPMENT Dr. Mohammad Mustafa	91 - 97
24	GOOD GOVERNANCE: PANACEA FOR REINFORCING INDIAN DEMOCRACY Dr. Kavitha. D	98 - 101

CONCEPT EVOLUTION AND SIGNIFICANCE OF DEMOCRATIC DECENTRALISATION.

***Dr. Ashokkumar V.Paled**

Today decentralization and democracy are the most significant themes in the development discourse. The dawn of 21ST century is marked by decentralized governance both as a strategy and changes in democracies. These changes led to such virtues of transparency, responsiveness and accountability and censure good governance. In the present context of rapid social change and development activities. In this scenario an attempt is made in this unit to discuss conceptual decentralization as an institutional mechanism to govern rural and urban areas of the society.

Democracy is considered as one of the best forms of government because it ensures liberty of thought, expression, belief, faith, and worship, equality in status and opportunity, fraternity as well as the right to participate in political decision-making, participation and control of governance by the people of the country is the essence of democracy. Such participation is possible only when the powers of the state are decentralized to the district, block and village levels where all the sections of the people come together, discuss their problems and suggest solutions and plan, execute as well as monitor the implementation of the programmes.

The word 'democratic' Decentralization means transfer of planning, decision-making or administrative authority from the central government to its field organizations, local administrative units, semi-autonomous organizations, local governments or non-governmental organizations.

Different forms of decentralization can be distinguished primarily by the extent to which the authority to plan, decide and manage is transferred and autonomy is achieved in their tasks. In simple under decentralization authority is not concentrated at the center, it is distributed to smaller administrative units.

Democratic decentralization envisages association of more and more people with government at all levels, national, regional and local levels. Administrative decentralization originated in the need for efficiency in terms of initiative, performance and speed of administrative personnel, performance at the lower levels. Administrative decentralization means the right to freedom of implementing planning and projects.

I. Evolution of democratic Decentralization.

After 2 world wars, the newly-formed-nation-states adopted the growth-centered model of development. In this model, the state assumed the moral and political responsibilities for the development of the society.

The growing realization among policy analysts that as government activities expand, it is increasingly difficult to plan and administer all development activities

Dr. Ashokkumar V. Paled

Dept: Political science ARM First Grade College, & P.G Centre Davanagere.
President: Karnataka State Political Science Teachers' Association ®

effectively and efficiently from the centre. Hence, local autonomy in making decisions of primary concern to the locality and greater responsibility for designing and implementing development programmes became necessity. This revived interest in the nation of decentralization.

Post-Independence India adopted a democratic system of governance. Institutions of democracy, in India in fact began to grow during the colonial rule. The provisions of democracy found their place in the government of India Acts of 1909, 1919 and 1935. Following the deliberations within the constituent assembly, democracy was introduced in the post-Independence India in 1950. In India, Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, Dr.B.R.Ambedkar & Jai Prakash narayan described democracy as the government that gives 'power to the people'

'Gandhi Said' True democracy could not be worked by some persons sitting at the top. It has to be worked from below by the people of every village".

In India the Panchayati Raj institutions can set an example for the world to emulate in the matter of democratic decentralization. Anthe first point of decentralization there are broadly three views.

The following committees have been instrumental for establishing local institutions in India.

- The Balwantray mehta report favoured the block as being nearest to the people (1957).

- The sukhmay chakravarty (Economic Advisory Council, (1984) Report on decentralization of planning.

- The Ashok Mehata Report-(1978) and other Reports.

- The Dantewala Report-(1978). On block level planning.

- The Hanumantha Rao Report(1984) on district planning.

Finally Both Balwanth Ray Mehata committee Report and Ashok mehata committee reports can be considered as landmarks in the history of democratic decentralization in India. With the introduction of the 73rd and the 74th Constitutional amendments, the decentralization has been democratized and the scope of democracy has expanded to include the women, OBC, and Dalits at the grass root level. Prior to this the dominant social groups exclusively dominated the institutions of the local self-governance.

II. Significance of Democratic Decentralization:-

Today Democratic decentralization is a prime mechanism through which democracy becomes truly representative and responsive.

- * G.Shabbir cheema and dennis A.Rondinelli, in their book Demarcated the following advantages of Demarcated decentralization:

- * Closer contact between government officials and local populations possible.

- * It will ensure greater representation of political, religious, ethnic and tribal groups

in development decision- making that could lead to greater equity in allocation of resources.

- * It will ensure better co-ordination.
- * It will institutionalize the participation of the citizens and exchange of information.
- * It will lead to more flexible, innovative and creative administration.
- * It will also reduce the cost of planning and increase the number of public goods.
- * Taking the points of service delivery closer to the peoples,
- * Strengthening the local bodies as self-government institutions.

III. Democratic Decentralization in India.

Grass roots governance has been a major concern of the planning process in Indian ever since the introduction of panchayati raj in 1959. Therefore, there is a need to redirect development efforts towards the poor and those at the grass roots. The 73rd and 74th Constitutional Amendment Acts have been major steps in the direction of decentralized governance in India.

The 73rd constitutional Amendment Act relates to introduce reforms in rural local bodies whereas the 74th constitutional Amendment Act relates to bring reform in urban local bodies. The Acts aims at integrating the concept of people's participation in a formal way with the planning process on the one hand and the devolution of responsibility to the people themselves on the other.

Democratic Decentralization in Rural Areas.

After independence, rural development forms the crux of India's development strategy. The government of India has made 73rd constitutional Amendment in 1992 to provide constitutional recognition to panchayath raj Institutions. The eleventh schedule lists out 29 subjects to be transferred to panchayat raj bodies. The panchayat raj institutions are responsible for the planning and implementation of programmes related to social justice and economic development.

The constitutional amendment has provided for the establishment of state election commission and state Finance commission. There is a considerable improvement in the process of democratic decentralization in rural areas.

Democratic Decentralization in Urban Areas.

The Indian Parliament enacted 74th constitutional Amendment Act 1992. This Act Provided constitutional recognition which is a milestone in the history of urban local Bodies. This Act is intended to give a more focused thrust to decentralization and the creation of a democratic governance structure at the urban areas.

Democratic Decentralizations in Tribal and Schedule Areas.

Special provisions are made in the constitution through the fifth and sixth schedules to protect the interests of tribal's autonomy and rights.

- * Gram sabha.
- * Gram Panchayat
- * Block/ Taluk Level Body.

* Local self, government is one way to operationalize decentralized Pattern of governance.

Today decentralization and democracy are the most significant themes in the development discourse. Decentralizations means transform of planning, decision-making or administrative authority from the central government to its field agencies, Democratic decentralization is an extension of the democratic principle that aims at widening the area of the people's participation, authority and autonomy through devolution of powers to people's representative organizations.

Reference

- 1) James Bryce: Modern Democracy vol.I.P.89
- 2) Mahajan, Dhar. V(2001), political Theory,
- 3) Sivarama Krishna.K.C. 2003, Power to the People: The politics and progress of Decentralizations, Konark publishers, New Delhi.
- 4) Prasad, Nageshwar, 1984, Decentralizations in Historical perspective, Gandhi institute of studies, Varanasi.
- 5) Smith, B.C 1985, Decentralizations; the Territorial Dimension of the stouten; Ge.rge Allen and unwind: Landon.
- 6) Agrawal, A. and J.C.Ribot (1999) "Accountability in Decentralization: A framework with South Asian and West African cases", Journal of Developing Areas, 33(4), 473-502

ಗ್ರಾಹಕರ ಸೇವೆಗಾಗಿ ನಿರಂತರವಾಗಿ ವಿಸ್ತಾರಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ ಬಿ.ಎಸ್.ಸಿ. ಸಂಸ್ಥೆ



BSC Saree Section



BSC Exclusive Show Room (Akkamahadevi Road)



BSC Mens Readymade Section



Mens Suiting & Shirting Section



BSC Kids Section



75 ಸಾವಿರ ಚದರ ಅಡಿ ವಿಶಾಲವಾದ
ಅತೀ ದೊಡ್ಡ ಬಟ್ಟೆ ಅಂಗಡಿ



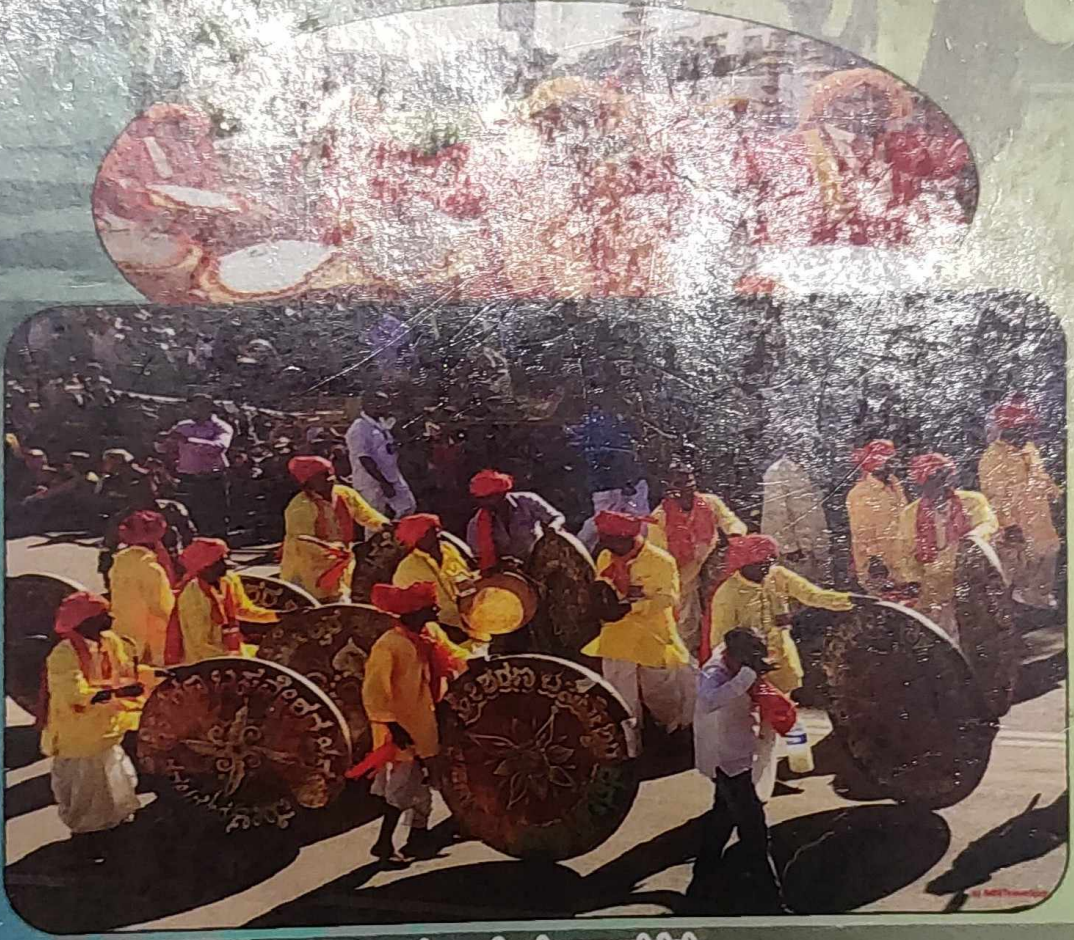
ಬಿ.ಎಸ್.ಚನ್ನಬಸಪ್ಪ & ಸನ್ಸ್

ಕಾಳಕಾದೇವಿ ರಸ್ತೆ / ಅಕ್ಕಮಹಾದೇವಿ ರಸ್ತೆ, ದಾವಣಗೆರೆ. ಫೋನ್: (08192) 256633, 231348

ದಾವಣಗೆರೆ ಹೊರತು ಪಡಿಸಿ ಬೇರೆ ಎಲ್ಲಾ ನಮ್ಮ ಬ್ರಾಂಚ್ ಇರುವುದಿಲ್ಲ



ಪನ್ನಡ ತಿಂಡಿಮ



ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು
ಡಾ. ಜಿ.ಎಂ. ನಾಗಯ್ಯ
ಸಂಪಾದಕರು
ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ
ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ದಾಪಗಾಂರೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಬಿ.ಎ., ಬಿ.ಎಸ್ಸಿ., ಬಿ.ಎಸ್ಸಿ.(ಹೋಂಸೈನ್ಸ್), ಬಿ.ಬಿ.ಎ., ಬಿ.ಎಸ್.ಡಬ್ಲ್ಯೂ., ಬಿ.ಎಫ್.ಡಿ., ಬಿ.ಎಫ್.ಎ.,
ಪದವಿ ತರಗತಿಗಳ ಮೂರನೇ ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ ಭಾಷಾ ಪಠ್ಯ
೨೦೦೭-೦೮, ೨೦೦೮-೦೯, ೨೦೦೯-೧೦

ಸಾರ್ವಜನಿಕ ವಾಣಿಜ್ಯ

ಪ್ರಾಧಿಕಾರ

ಕನ್ನಡ ಡಿಂಡಿಮ

ಕನ್ನಡ ಭಾಷಾ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ (ಸಿ.ಬಿ.ಸಿ.ಎಸ್. ಸ್ಕೀಂ)

ದಾವಣಗೆರೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ

ಬಿ.ಎ., ಬಿ.ಎಸ್ಸಿ., ಬಿ.ಎಸ್ಸಿ. (ಹೋಂಸೈನ್ಸ್.), ಬಿ.ಸಿ.ಎ.,

ಬಿ.ಎಸ್.ಡಬ್ಲ್ಯೂ., ಬಿ.ಎಫ್.ಡಿ., ಬಿ.ಎಫ್.ಎ.,

ಪದವಿ ತರಗತಿಗಳ ಮೂರನೆಯ ಸೆಮಿಸ್ಟರ್

2017-18, 2018-19, 2019-20

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಜಿ. ಎಂ. ನಾಗಯ್ಯ

ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೆರಿ

ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಇಲ್ಲಿನ ಬರಹಗಳ ಲೇಖಕರನ್ನು / ಹಕ್ಕುದಾರರನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿ ಅವರ
ಒಪ್ಪಿಗೆಯನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಕಾಶನ ಸಂಸ್ಥೆಯು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದೆ.
ಅದರಿಂದ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿವರಗಳನ್ನು ದಯವಿಟ್ಟು ಯಾರಾದರೂ ತಿಳಿಸಿದಲ್ಲಿ
ಸರಿಯಾದ ಸ್ವೀಕೃತಿಗಳನ್ನು ಮುಂದಿನ ಅವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಮೂಹಿಸಲಾಗುವುದು.

ಕನ್ನಡ ಡಿಂಡಿಮ - : Kannada text book for III Sem.
Kannada Dinidima : B.A., B.Sc., B.Sc.(Home Science)
B.C.A., B.S.W., B.F.A.

Chief Editor : Dr. J. M. Nagaiiah

Editors : Dr. Prakasha Halageri
Prof. Anjinappa D.

Published by : Sri Malleshwara Printers and
Enterprises, Bhadravathi,
Karnataka, India

ಮೊದಲ ಮುದ್ರಣ : 2017

ISBN : 9789384534950

ಬೆಲೆ : ರೂ. 70/-

ಪೇಜ್ : 14 + 164

ಅಕ್ಷರ ಜೋಡಣೆ : ಥಾಮಸ್ ಕಂಪ್ಯೂಟರ್ಸ್,
ದಾವಣಗೆರೆ - 9481580664

ಮಾಖಿಮಟ ವಿನ್ಯಾಸ : ಸಂಪಾದಕರು

ಮುದ್ರಣ : ಶ್ರೀ ಮಲ್ಲೇಶ್ವರ ಪ್ರಿಂಟರ್ಸ್ ಅಂಡ್
ಎಂಟರ್‌ಪ್ರೈಸಸ್, ಭದ್ರಾವತಿ

ಪ್ರಕಾಶಕರು : ಜೇಮ್ಸ್ ಪಬ್ಲಿಕೇಶನ್, ಭದ್ರಾವತಿ,
ಕರ್ನಾಟಕ, ಭಾರತ.

ಡಾ. ಜಿ. ಎಂ. ನಾಗಯ್ಯ	... ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು
ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ	... ಸಂಪಾದಕರು
<u>ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.</u>	... ಸಂಪಾದಕರು

ಸಂಪಾದಕರ ನುಡಿ

ಹೊಸ ಕಾಲದ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಮತ್ತು ಬೇಡಿಕೆಗಳಿಗನುಸಾರವಾಗಿ ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ ಕಲಿಯುವ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ ಮಾದರಿಯಾಗಿ ರೂಪುಗೊಳ್ಳಬೇಕಿದೆ. ಇಂಥ ಅನಿವಾರ್ಯತೆಯನ್ನು ಮನಗಂಡ ದಾವಣಗೆರೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ಹೊಸ ಆಶಯದ ಪಠ್ಯಗಳನ್ನು ರೂಪಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಆಶಾದಾಯಕವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತುತ ಪಠ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಲಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಕೇವಲ ಭಾಷೆಯಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲ. ಅದು ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟುವ, ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಬೆಳೆಸುವ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಪತ್ತು ಎಂಬುದನ್ನು ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿಕೊಡಬೇಕಿದೆ. ಆಧುನಿಕರಣ, ಔದ್ಯೋಗೀಕರಣ, ನಗರೀಕರಣಗಳಂಥ ಆಧುನಿಕ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಗಳಿಗೆ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ಮುಖಾಮುಖಿಯಾಗಿಸಿ ಅಸ್ಥಿತೆಯನ್ನು ಮೂಡಿಸಬೇಕಿದೆ. ಈ ತರಹದ ಕಸುವು ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಗೆ ಹಿಂದಿನಿಂದಲೂ ಇದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತಲೇ ಅದರ ಪರಂಪರೆ, ಚರಿತೆ, ಜನಜೀವನ, ನೆಲ, ಜಲ, ಗಡಿ, ವೈಭವ, ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಸಂಪತ್ತು ಮಾನ ಸನ್ಮಾನ...ಇತ್ಯಾದಿ ಗುಣ ವಿಶೇಷತೆಗಳನ್ನು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ತಿಳಿಸಬೇಕಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಕೇವಲ ಚಿನ್ನದ ಭಾಷೆಯಲ್ಲ ಅದು ಅನ್ನದ ಭಾಷೆ. ಕನ್ನಡ ಕೊರಳ ಭಾಷೆಯಲ್ಲ ಅದು ಕರುಳ ಭಾಷೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಡುವ ಗುರುತರ ಜವಾಬುದಾರಿ ಭಾಷಾ ಬೋಧಕರ ಮೇಲೂ ಇದೆ.

ಕನ್ನಡದ ಮಹಾಕವಿ ಪಂಪ ಹೇಳುವಂತೆ ಕನ್ನಡವು 'ಪಲವು ಕನ್ನಡಂಗಳ್' ರೀತಿಯಲ್ಲಿದೆ. ಪ್ರಾದೇಶಿಕ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಮತ್ತು ಭೌಗೋಳಿಕವಾಗಿದ್ದರೂ ಅದು ಬಸವಣ್ಣನವರು ಹಾಡಿದಂತೆ 'ಮುತ್ತಿನ ಹಾರ'ದಂತೆ, ಅಲ್ಲಮ ಪ್ರಭುಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ 'ಜ್ಯೋತಿರ್ಲಿಂಗ'ವಾಗಿದೆ. ದರ್ಮನ ಕವಿ ಕುವೆಂಪು ಪ್ರಕಾರ 'ಜನೋಪಯೋಗಿ ಲೋಕೋಪಯೋಗಿ'ಯಾಗಿದೆ. ವರಕವಿ ಬೇಂದ್ರೆಯವರು ನುಡಿಯುವಂತೆ ಅದು 'ಮಾತು ಮಾತು ಮಥಿಸಿ ಬಂದ ನಾದದ ನವನೀತ...' ಅರ್ಥವಿಲ್ಲ ಸ್ವಾರ್ಥವಿಲ್ಲ ಬರಿಯ ಭಾವಗೀತ' ಒಟ್ಟಾರೆ ಅದು ನುಡಿವ ಬೆಡಗು, ಬದುಕಿನ ಭಾಷ್ಯ ಎಂಬುದನ್ನು ಕಲಿಸಿಕೊಡಬೇಕಿದೆ.

ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಗ್ರಹಣ-ಮನನ-ಧಾರಣ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಔದ್ಯೋಗಿಕ ಜಿನ್ನತ್ಯಕ್ಕೆ ಭಾಷೆಯೊಂದು ಸಶಕ್ತ ಸಾಧನವೆಂಬುದನ್ನು ಬೋಧಕರು ಅರುಹಬೇಕಿದೆ. ಕನ್ನಡದ

ಪಾರಂಪರಿಕ ಜ್ಞಾನಶಿಷ್ಟಗಳ ಜೊತೆಗೆ ಭಾಷೆ- ಸಾಹಿತ್ಯಗಳು ಮನುಷ್ಯನ ಬದುಕನ್ನು ಹೇಗೆ ಉದ್ಧರಿಸುತ್ತವೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಸೂಕ್ತ ಸಾಧಾರಗಳ ಮೂಲಕ ವಿವೇಚಿಸಬೇಕಿದೆ. ಕಲಿಕಾ ಕೌಶಲ್ಯ, ವೃತ್ತಿ ಕೌಶಲ್ಯಗಳಿಗೆ ಭಾಷೆಯೊಂದು ಪಡಿಮೆಟ್ಟಿಲೆಂಬುದನ್ನು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ತುಂಬಬೇಕಿದೆ. ಭಾಷೆಯ ಮೂಲಕವೇ ಮನುಕುಲದ ಪ್ರಗತಿ ಎಂಬುದನ್ನು ಸಾದರಪಡಿಸಬೇಕಿದೆ. ಚರ್ಚೆ, ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ, ವಿಮರ್ಶೆ, ಸಂಶೋಧನೆಗಳಿಗೆ ಅದು ಹೇಗೆ ಪೂರಕವಾಗುತ್ತದೆಂಬುದೂ ಅಷ್ಟೇ ಮಹತ್ವದ್ದಾಗಿದೆ.

ಪ್ರಸ್ತುತ ಪಠ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಾಪಕರು ಮತ್ತು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಕಲಿಕಾ ವಿನ್ಯಾಸದ ಹಲವು ಅತ್ಯುಪಯುಕ್ತ ಮಾದರಿಗಳು ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಯನ ಸೂಚಿಗಳು ಸಾದರ ಪಡಿಸಿದ ಪಠ್ಯಗಳ ಮೂಲಕ ದೊರಕಿಸಿಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ವಿನಮ್ರ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕನ್ನಡಪರ ಕವಿತೆ, ಕತೆ, ಲೇಖನ, ನಾಟಕ, ಪತ್ರಲೇಖನಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಇಂಥದೊಂದು ಮಹತ್ತರವಾದ ನಮ್ಮ ಆಶಯಕ್ಕೆ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಹಕಾರ ಮತ್ತು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯವನ್ನು ನೀಡಿದವರು ಸನ್ಮಾನ್ಯ ಕುಲಪತಿಗಳಾದ ಪ್ರೊ.ಬಿ.ಬಿ.ಕಲಿವಾಳ ಅವರು ಮತ್ತು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯದ ಅಧಿಕಾರಿ ವರ್ಗ. ಇವರಿಗೆ ನಮ್ಮ ಅನಂತ ಕೃತಜ್ಞತೆಗಳು. ಈ ಪಠ್ಯ ರೂಪುಗೊಳ್ಳಲು ಕಾರಣರಾದ ಕನ್ನಡ ಅಧ್ಯಯನ ಮಂಡಲಿಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷರೂ ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರೂ ಆದ ಮಾನ್ಯಶ್ರೀ ಡಾ. ಜಿ.ಎಂ.ನಾಗಯ್ಯನವರಿಗೂ, ಮಂಡಲಿಯ ಸದಸ್ಯರಿಗೂ, ಅಧ್ಯಾಪಕ ವೇದಿಕೆಯವರಿಗೂ, ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸಲಹೆ, ಸೂಚನೆಗಳನ್ನು ನೀಡಿದ ಪ್ರೊ.ಎಸ್.ವಿ.ಗಾಯತ್ರಿದೇವಿ, ಚಿತ್ರದುರ್ಗ ಇವರಿಗೂ ಮತ್ತು ದಾವಣಗೆರೆ ಸರ್ಕಾರಿ ಪ್ರಥಮ ದರ್ಜೆ ಕಾಲೇಜಿನ ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗದ ಮುಖ್ಯಸ್ಥರಾದ ಪ್ರೊ.ತೂ.ಕ.ಶಂಕರಯ್ಯನವರಿಗೂ, ಸನ್ನಿಹರಿಗೂ ಅಕ್ಷರ ಜೋಡಣೆ ಮಾಡಿದ ಥಾಮಸ್ ಕಂಪ್ಯೂಟರ್ ನ ಥಾಮಸ್ ಅವರಿಗೂ ಅಂದವಾಗಿ ಮುದ್ರಿಸಿಕೊಟ್ಟ ಭದ್ರಾವತಿಯ ಶ್ರೀ ಮಲ್ಲೇಶ್ವರ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪ್ರೆಸ್‌ನವರಿಗೂ ನಾವು ಚಿರರುಣಿಗಳಾಗಿದ್ದೇವೆ. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ಹಾಗೂ ಅಧ್ಯಾಪಕರ ನಡುವೆ ಒಂದು ಕನ್ನಡ ಪ್ರಜ್ಞೆಗೆ ವೇದಿಕೆಯಾಗಿ ಕನ್ನಡ ಮನಸ್ಸು ಜಾಗೃತವಾದರೆ ಪ್ರಸ್ತುತ ಪಠ್ಯ ರಚನೆಯ ಆಶಯ ಸಾರ್ಥಕವಾದೀತೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ್ದೇವೆ.

ಸಂಪಾದಕರು,

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೆರಿ
ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಭೀಮ್

ಧಾರಣ - ಮನನ - ಅನುಷ್ಠಾನ

ಬದುಕಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಬೇಕು
ಬಾಳಿಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಬೇಕು
ಬದುಕಿ ಬಾಳಲು ನಮ್ಮ
ಗ್ರಹಣ ಧಾರಣ ಮನನ
ಅನುಷ್ಠಾನ ಸರಿಯಿರಬೇಕು-

ವರಕವಿ ಬೇಂದ್ರೆ

ಸಮಕಾಲೀನ ಸಮಾಜದ ಆಶೋತ್ತರಗಳು ತುಂಬಾ ಸಂಕೀರ್ಣವಾಗಿವೆ. ಆಧುನಿಕತೆಯು ಬದುಕಿನ ಎಲ್ಲ ರಂಗಗಳಲ್ಲೂ ದಾಂಗುಡಿಯಿಡುತ್ತಿದೆ. ಅದು ತಂದೊಡ್ಡುತ್ತಿರುವ ಸವಾಲು ಸಂಕಷ್ಟಗಳು ಕಾಣಿಸುವೆನ್ನಿಸಿವೆ. ಇಂಥ ಸಂಕೀರ್ಣ ನೆಲೆಗಳನ್ನು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತಲೇ ಸರಳತೆಯ ದಾರಿ ತೋರಬೇಕಾದ ಗುರುತರ ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರ ಮೇಲಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಬಗೆಯ ಪಠ್ಯಕ್ರಮಗಳು ಈ ಕಾಲದ ಜರೂರತೆಯನ್ನು, ಜವಾಬುದಾರಿಕೆಯನ್ನು ಪೂರೈಸಬೇಕಿದೆ. ಹಾಗಾಗಿ ಭಾಷಾ ಪಠ್ಯವೊಂದು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಕೇಂದ್ರಿತವಾಗುವಂತೆ ರೂಪಿಸುವ ಕೆಲಸವನ್ನು ಸದರಿ ಪಠ್ಯಕ್ರಮದ ಮೂಲಕ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾಗಿ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.

“ಗ್ರಹಣೌ ಧಾರಣೌ ಮನನೌ ಅನುಷ್ಠಾನವಿಧಂ” (ಗ್ರಹಿಸಿ, ಧರಿಸಿ, ಮನನ ಮಾಡಿ ಇವುಗಳನ್ನು ಅನುಷ್ಠಾನ-ಕಾರ್ಯರೂಪಕ್ಕೆ ತರಬೇಕು) ಇಂಥ ಕಾಲವಿದು. ಮಾನವನ ಬದುಕು ಕೌಶಲ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದರೆ ಮಾತ್ರ ಆಧುನಿಕತೆಯ ಭರದಲ್ಲಿ ಸಲ್ಲಲು ಸಾಧ್ಯ. ಇಂದಿನ ಪ್ರತಿ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲೂ ಸರಿಯಾದ ಗ್ರಹಿಕೆ ಅನಿವಾರ್ಯ ಎಂಬುದನ್ನು ಬೇಂದ್ರೆಯವರ ಮೇಲಿನ ಪದ್ಯದ ಸಾಲುಗಳೇ ಸಾಬೀತು. ನಮ್ಮ ಗ್ರಹಿಕೆಗಳೇ ಉನವಾಗಿದ್ದಾಗ ಸದೃಢ ಸಮಾಜ ನಿರ್ಮಾಣ ಹೇಗೆ ಸಾಧ್ಯ? ಎಂಬುದು ಮುಖ್ಯ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಹಾಗಾಗಿ ನಾವು ಗ್ರಹಿಸುವ ಮುನ್ನ ಸರಿ ತಪ್ಪುಗಳ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡಿಯೇ

ಮುಂದುವರಿಯಬೇಕು. ಗ್ರಹಿಸಿದ್ದು ಸರಿಯಿದ್ದಾಗ ಅದನ್ನು ನಮ್ಮೊಳಗೆ ಒಂದಷ್ಟು ಕಾಲ ನೆಲೆಸಲು ಬಿಡಬೇಕು. ತರಾತುರಿಯಿಂದ ಕೆಲಸ-ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಪೂರೈಸುವ ಸಂದರ್ಭ ಬಂದಾಗ್ಯೂ ಸ್ವಲ್ಪ ಹೊತ್ತು ವಿವೇಚಿಸಲು ಅವಧಿ ಬೇಕೇ ಬೇಕು. ಹೀಗಾಗಿ ಮನುಷ್ಯ ಕುರೂಪಿಯಾಗುವುದೂ ಸುರೂಪಿಯಾಗುವುದೂ ಈ ಪಾಠಗಳ ಮೇಲೆಯೇ ಎಂಬುದನ್ನು ಮರೆಯುವಂತಿಲ್ಲ. 'ವಿಷದಿಂದ ವಿಷ ಅಮೃತದಿಂದ ಅಮೃತ' ಎನ್ನುವ ಲೋಕಾರೂಢಿಯ ಮಾತು ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿಯೇ ರೂಪುಗೊಂಡಿದೆ. ನಮ್ಮ ಗ್ರಹಿಕೆಗಳು ಆರೋಗ್ಯಕರವಿದ್ದಾಗ ಮುಂದಿನ ಎಲ್ಲ ಹಂತಗಳೂ ಜೀವ ಪರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರಲು ಸಾಧ್ಯ. ಎಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ವಿಷವನ್ನು ಅಮೃತವಾಗಿಯೂ, ಅಮೃತವನ್ನು ವಿಷವಾಗಿಯೂ ಗ್ರಹಿಸಿದ್ದರ ಪರಿಣಾಮ ಘೋರ ದುರಂತಗಳೇ ಸಂಭವಿಸಿರುವುದನ್ನು ಚರಿತೆಯ ಪುಟಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಮನುಷ್ಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗಿಂತ ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವುದೇ ಆತನ ವಿವೇಕಶೀಲತೆಯಿಂದ. ಅವನಲ್ಲಿ ಸರಿ ತಪ್ಪುಗಳ ಆಲೋಚನಾ ಲಹರಿಯಿದೆ. ಆದರೆ ಇತರ ಯಾವುದೇ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಆ ಶಕ್ತಿ ಸಾಧ್ಯವಾಗಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ಅವುಗಳಿಗೆ ಗ್ರಹಿಕೆ-ಧರಿಸುವಿಕೆ-ಮನನತೆಯ ಅನುಷ್ಠಾನದ ಗೊಡವೆಯೇ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಗ್ರಹಿಕೆ ಎಂದರೆ ಯಾವುದೇ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೀರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಇಂಗ್ಲೀಷಿನಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ 'ಸಕ್', 'ಗ್ರಾಸ್ಪ್' ಎಂಬ ಅರ್ಥಾವಳಿಗಳಿವೆ. ಇದೊಂದು ಭಾವಸ್ಥಿತಿ. ಮನೋಭಿತ್ತಿ. ಮಾನಸಿಕ ವ್ಯಾಪಾರ. ಸಿಗ್ಮಂಡ್ ಫ್ರಾಯ್ಡ್ ಮತ್ತವನ ಶಿಷ್ಯ ಸಿ.ಜೆ.ಯೂಂಗ್ ನಂಥ ಜಗದ್ವಿಖ್ಯಾತ ಮನೋವಿಜ್ಞಾನಿಗಳು ಕನಸು-ಮನಸುಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ವಿವೇಚಿಸುವಾಗ 'ಗ್ರಹಣ ಶಕ್ತಿ-ಧಾರಣ ಯುಕ್ತಿ-ಮನನ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ' ಎಂದು ನಿಷ್ಕರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಭೌತಿಕ ಜಗತ್ತಿನ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಮಟಿರಿಯಲಿಸ್ಟಿಕ್-ವಸ್ತುಗಳು ಹೇಗೆ ಕಾರಣವೋ ಬೌದ್ಧಿಕ ಪುರೋಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಅಮೂರ್ತ ಸಂಗತಿಗಳಾದ ಗ್ರಹಣ-ಧಾರಣ-ಮನನ-ಅನುಷ್ಠಾನಗಳು ಸಕಾರಣವೆನ್ನುತ್ತಾರೆ. ಈ ಮೂರೂ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳು ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಪೂರಕವಾಗಿದ್ದು ಏರುವೇಣಿಯ ಸೋಪಾನಗಳಾಗಿವೆ. ಧಾರಣ ಪದಕ್ಕೆ 'ಟು ಅಡಾಪ್ಟ್' ಎಂಬರ್ಥವಿದ್ದು ಮನೋಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ಕೆಲಕಾಲ ನೆಲೆಗೊಳ್ಳುವಂಥದಾಗಿದೆ. ವಿಚಾರಗಳ ಮಾಗುವಿಕೆಗೆ ಇದೊಂದು ಅನಿವಾರ್ಯ ವೇದಿಕೆ. ಮನನ ಎಂದರೆ ಮೆಲುಕು ಹಾಕುವುದು. ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಚಿಂತನ-ಮಂಥನಗಳಿಂದ ಮಥಿಸಿ ಕೊನೆಗೆ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಸುವ ಕ್ರಮ. ಇಂಗ್ಲೀಷಿನಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ 'ಟು ಥಿಂಕ್ ಪ್ರಾಪರ್ಲಿ' ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ. ಅನುಷ್ಠಾನವೆನ್ನುವುದು

ಮೇಲಿನವುಗಳ ಕಾರ್ಯರೂಪ. ಇಂಗ್ಲೀಷಿನಲ್ಲಿ 'ಟು ಡೂ', 'ಟು ಗೋಅಹೇಡ್', 'ಟು ಅಚೀವ್', 'ಟು ಗೋ ಟು ಪ್ರೋಗ್ರೆಸ್' ಇತ್ಯಾದಿ ಅರ್ಥಗಳಿವೆ. ಅಂದರೆ ಅಂದುಕೊಂಡದ್ದನ್ನು ನೆರವೇರಿಸು ಎಂದರ್ಥ.

ಈ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳು ಕಲಿಕೆಯ ಹಂತದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗಂತೂ ಅತ್ಯುಪಯುಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಸಮಾಜಮುಖೀ ಚಿಂತನೆಗಳ ಕಾರ್ಯರೂಪಕ್ಕೆ ಈ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಗಳು ಈ ಹಿಂದೆ ತಿಳಿಸಿದಂತೆ ಮೆಟ್ಟಿಲುಗಳಾಗಿವೆ. ಕಲೆ, ಸಾಹಿತ್ಯ, ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ಸಂಪ್ರದಾಯ-ಪರಂಪರೆ-ಆಧುನಿಕತೆ ಮುಂತಾದ ಅನ್ಯ ಜ್ಞಾನ ಶಿಸ್ತುಗಳ ಒಳಿತು-ಕೆಡುಕುಗಳನ್ನು ವಿವೇಕದಿಂದ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿಸಲು ಮಾನದಂಡಗಳಾಗಿವೆ. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಚಲನಶೀಲ ಗತಿಗೆ, ಜಿನ್ನತ್ಯಕ್ಕೆ, ಭವಿಷ್ಯದ ರೂಪಿಕೆಗೆ ಇವು ನಿರ್ಧಾರಾತ್ಮಕವಾಗಬಲ್ಲವು. ಪಿ.ಲಂಕೇಶ್ ಹೇಳುವಂತೆ "ನಮ್ಮ ಗ್ರಹಿಕೆಗಳೇ ನಮ್ಮೊಳಗೆ ಮೊಳೆತು ನಮ್ಮ ಚಿಂತನೆಗಳೇ ದಾರಿದೀಪವಾಗಬೇಕು". ಕಂಡದ್ದೊಂದು ಗ್ರಹಿಸಿದ್ದೊಂದು! ಎಂಥ ಅಪಾಯಕಾರೀ ಬೆಳವಣಿಗೆ! ಕೆಲವು ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಂತೂ ಸರಿಯಾಗಿ ಗ್ರಹಿಸದೇ ಅಪಾರ್ಥ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೇ ಹೆಚ್ಚು ಇದು ವಿಚಾರ, ಸಿದ್ಧಾಂತ, ಧರ್ಮ, ಸಂಸ್ಕೃತಿ-ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಆಧುನಿಕತೆ, ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ... ಇತ್ಯಾದಿ ಎಲ್ಲ ರಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಅಪವಾದವಾಗಿಯಾದರೂ ಇರುವಂಥದ್ದೇ. ಅದರಲ್ಲೂ ಶಿಕ್ಷಣ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಒಡಕು ಗ್ರಹಿಕೆಗಳಿಗಿಂತ ಒಟ್ಟಾಗಿಸುವ ಆಲೋಚನೆಗಳು ಬೇಕಿವೆ.

ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ "ಕನ್ನಡ ಡಿಂಡಿಮ" ಪಠ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಾಡು-ನುಡಿ-ನೆಲ-ಜಲ-ಸಾಮಾಜಿಕ-ರಾಜಕೀಯ-ಭೌಗೋಳಿಕ-ಆರ್ಥಿಕ-ಚಾರಿತ್ರಿಕ-ಕಲಾತ್ಮಕ-ಸಂವೇಗಾತ್ಮಕ ಸಂವೇದನೆಗಳನ್ನು ಧನಾತ್ಮಕ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳೆಲ್ಲ ಸ್ವಚ್ಛ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಗ್ರಹಿಸಬೇಕಿದೆ. ಯಾವುದೇ ಪೂರ್ವಗ್ರಹಗಳಿಂದ ದೂರವಾಗಿ ಒಂದು ಸಶಕ್ತ, ಆಲೋಚನಾ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ಅಧ್ಯಾಪಕರಾದ ನಾವು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟು ಹಾಕಬೇಕಿದೆ.

ಪ್ರಸ್ತುತ ಪಠ್ಯದ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳು ಸೃಜನಶೀಲ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವಕ್ಕೆ ತುಡಿಯುತ್ತವೆ. ವ್ಯಕ್ತಿ, ಕುಟುಂಬ, ಸಮುದಾಯ, ಸಮಾಜ, ನಾಡು, ರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿ ಮಹತ್ತರವಾದ, ಮಹೋನ್ನತ ಪಾತ್ರ ವಹಿಸುವ ಇಲ್ಲಿನ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಹದವಾದ ಮನೋಭೂಮಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳಾಗಿ ಬಿದ್ದು ಹೆಮ್ಮರವಾಗಿ ಬೆಳೆಯಲೆಂಬ ಸದಾಶಯದಿಂದ ಪೂರಕವಾದ, ಅತ್ಯುಪಯುಕ್ತವಾದ ಕವಿತೆ, ಕತೆ, ನಾಟಕ, ಲೇಖನ,

ಪತ್ರಲೇಖನಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಕಾಲಮಿತಿ ಹಾಗೂ
ಹುಟ್ಟುಗಳಮಿತಿಯಿಂದ ಒಂದು ಚೌಕಟ್ಟಿನೊಳಗೆ ಎಷ್ಟು ಸಾಧ್ಯವೋ ಅಷ್ಟೂ ಉಪಯುಕ್ತ
ಜ್ಞಾನಭಂಡಾರವನ್ನು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಕೈಗಿಡುವ ವಿನಮ್ರ ಯತ್ನವನ್ನಷ್ಟೇ ನಾವಿಲ್ಲಿ
ಮಾಡಿದ್ದೇವೆ. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ-ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಲೋಕ ಅಪಾರವಾದ ಅರಿವಿನ ಸಾಗರ.
ನಾವಿಲ್ಲಿ ಬೋಗಸೆಯಷ್ಟನ್ನೇ ಮಾದರಿಯಾಗಿ ಮೊಗದಿದ್ದೇವೆ. “ಕನ್ನಡ ಡಿಂಡಿಮ”
ಬಾರಿಸುವ ಮೂಲಕ ನಾವೆಲ್ಲ ಸಾಗರ ಸೇರುವ ಜೀವನದಿಗಳಂತೆ ಸಾಗಬೇಕಿದೆ.
ಸ್ವಾಭಿಮಾನ-ಸಂಘಟನೆ-ಹೋರಾಟದ ಹಾದಿಗಳನ್ನು ಮೈಚಂಪಾ ಹೇಳುವಂತೆ
“ಕನ್ನಡ ಕನ್ನಡ ಬರಿ ನಮ್ಮ ಸಂಗಡ” ಎನ್ನುತ್ತಾ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಸಮೂಹಕ್ಕೆ ತೋರಬೇಕಿದೆ.
ಏಕೆಂದರೆ ಬರಗೂರು ರಾಮಚಂದ್ರಪ್ಪನವರು ತಿಳಿಸುವಂತೆ “ಕನ್ನಡ ಕೇವಲ ಚೆನ್ನದ
ಭಾಷೆಯಲ್ಲ ಅದು ಅನ್ನದ ಭಾಷೆ; ಕೊರಳ ಭಾಷೆಯಲ್ಲ ಅದು ಕರುಳ ಭಾಷೆ”.
ಕೊನೆಗೆ ಸಮನ್ವಯದ ಚಿಂಬೆಳಕಿನ ಕವಿ ಚೆನ್ನವೀರ ಕಣವಿಯವರು ಸಾರುವಂತೆ
“ಹೆಸರಾಯಿತು ಕರ್ನಾಟಕ ಉಸಿರಾಗಲಿ ಕನ್ನಡ, ಹಸಿಗೋಡೆಯ ಹರಳಿನಂತೆ
ಹುಸಿಹೋಗದ ಕನ್ನಡ”. ಈ ಆಶಯ ಕೈಗೂಡಲೆಂದು ಹಾರೈಸುತ್ತ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ
ಬೋಧಕರಿಗೆ ಶುಭಾಶಯಗಳನ್ನು ಕೋರುತ್ತಾ ಈ ಪಠ್ಯವನ್ನು ತಮಗೊಪ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ.

ಸಂಪಾದಕರು,

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ

ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಹೊಸ ಕಾಲದ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಮತ್ತು ಬೇಡಿಕೆಗಳಿಗನುಸಾರವಾಗಿ
 ಕೃಷಿ ಉತ್ಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ಕಲಿಯುವ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ ಹೂಡರಿಯಾಗಿ
 ರೂಪುಗೊಳ್ಳಬೇಕಿದೆ. ಇಂಥ ಅನಿವಾರ್ಯತೆಯನ್ನು ಮನಗಂಡ
 ದಾಖಲಾಗಿದೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ಹೊಸ ಆಶಯದ ಪಠ್ಯಗಳನ್ನು
 ರೂಪಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಆಶಾದಾಯಕವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತುತ
 ಪಠ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಲಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಕೇವಲ ಭಾಷೆಯಷ್ಟೇ
 ಅಲ್ಲ, ಅದು ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟುವ, ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಬೆಳೆಸುವ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ
 ಕೃತಿ. ಇದನ್ನು ಮನಗಂಡು ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿಕೊಡಬೇಕಿದೆ.
 ಇದರಲ್ಲಿ ಕವಿಗಳು, ಲಿಂಗೋಗೀತರಣ, ನಗರೀಕರಣಗಳಂಥ ಆಧುನಿಕ
 ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡು ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಮೂಲಮುಖಿಯಾಗಿಸಿ
 ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಗೆ ತಿಳಿಸಬೇಕಿದೆ. 3. ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಗೆ
 ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುವುದು. ಅದರ
 ಕವಿಗಳು, ಕವಿತೆ, ಜನಜೀವನ, ನೆಲ, ಜಲ, ಗಡಿ, ವೈಭವ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ
 ಸಂಪತ್ತು ಮಾನ ಸನ್ನಾಹ... ಇತ್ಯಾದಿ ಗುಣ ವಿಶೇಷಗಳನ್ನು
 ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ ತಿಳಿಸಬೇಕಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಕೇವಲ ಚಿನ್ನದ ಭಾಷೆಯಲ್ಲ
 ಅದು ಅನ್ನದ ಭಾಷೆ. ಕನ್ನಡ ಕೊರಳ ಭಾಷೆಯಲ್ಲ ಅದು ಕರುಳ ಭಾಷೆ
 ಎಂಬುದನ್ನು ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಡುವ ಗುರುತರ ಜವಾಬ್ದಾರಿ
 ಭಾಷಾ ಬೋಧಕರ ಮೇಲೂ ಇದೆ.

ಪ್ರಸ್ತುತ ಪಠ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಾಪಕರು ಮತ್ತು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಕಲಿಕಾ
 ವಿನ್ಯಾಸದ ಹಲವು ಅತ್ಯುಪಯುಕ್ತ ಮಾದರಿಗಳು ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಯನ
 ಸೂಚಿಗಳು ಸಾದರ ಪಡಿಸಿದ ಪಠ್ಯಗಳ ಮೂಲಕ
 ದೊರಕಿಸಿಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ವಿನಮ್ರ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕನ್ನಡಪರ ಕವಿತೆ,
 ಕತೆ, ಲೇಖನ, ನಾಟಕ, ಪತ್ರಲೇಖನಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಸಂಪಾದಕರು
 ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ
 ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

KANNADA DINDIMA



9 789384 534950



0 1 1 1 4 >

₹ 70-00



ಜೀವನ್ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್
 ಭದ್ರಾಪತಿ-577801

ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

Volume-II

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು:

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ

ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಶ್ರೀ ಆನಂದಕುಮಾರ ಎಂ. ಜಕ್ಕಣ್ಣವರ

ಶ್ರೀ ಮಂಜುನಾಥಗೌಡ ಶಿ. ಪಾಣಲ

ಸಿದ್ಧೇಶ್ವರ ಶ್ರೀ ಪ್ರಕಾಶನ, ವಿಜಯಪುರ

ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA

VOL- II

First Impression: 2017

Copyright © ಸಮಷ್ಟಿ ಫೌಂಡೇಶನ್, ಧಾರವಾಡ.

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

ISBN: 978-93-84534-95-0

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Price: ₹ 500/-

Printed by:

Om Print Point, Dharwad

Published by :

I.S Mujawar, Siddheshwar Shri Prakashana, Vijayapur.

Typeset by :

Mr. Jagadeesh K. Angadi

Sai printers.

Dharwad

95357 13213

ಸಂಪಾದಕೀಯ ನುಡಿಗಳು

ಆತ್ಮೀಯರೆ, “ಸಮಕಾಲೀನ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಮತ್ತು ಪರಿಹಾರಗಳು: ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ ಅಧ್ಯಯನಗಳ ಅನುಸಂಧಾನ” ಎನ್ನುವ ಪ್ರಧಾನ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಡಿ ಒಂದು ದಿನದ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕರಣವನ್ನು ಹಮ್ಮಿಕೊಂಡಿದ್ದು ಶೀರ್ಷಿಕೆಯೇ ನಮ್ಮ ಧೈಯೋದೇಶಗಳನ್ನೂ ಆಶಯಗಳನ್ನೂ ಬಿಂಬಿಸುತ್ತಿದೆ. ಪ್ರಸ್ತುತ ಸಮಾಜ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಹಲವು ಜ್ವಲಂತ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಚರ್ಚಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಈ ಮೀಮಾಂಸೆ ಅಲ್ಲಿಗೇ ನಿಲ್ಲದೆ, ಪರಿಹಾರೋಪಾಯಗಳನ್ನು ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವುದು ಕೂಡ ಮುಖ್ಯ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ.

ಎಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳು ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಿ ನಿಂತು ಬಿಡುತ್ತವೆ ಎಂಬುವುದು ಕನ್ನಡಿಯಷ್ಟೇ ಸತ್ಯ. ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತರು, ಅರಿವುಳ್ಳವರು, ಬುದ್ಧಿಜೀವಿಗಳಾದವರು ತಮ್ಮ ವೈಚಾರಿಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿಂದ ಬಗ್ಗಡವಾಗುತ್ತಿರುವ ಸಮಾಜದ ಎಲ್ಲಾ ರಂಗಗಳ ವೈರುಧ್ಯಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ವಿಜೃಂಭಿಸಿ ತಟಸ್ಥರಾಗುತ್ತಿರುವ ಈ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಷ್ಟೇ ಪ್ರಧಾನವಲ್ಲ; ಉತ್ತರವೂ ಉಸಿರಾಗಬೇಕು. ಕೆಡವಲ್ಲಟ್ಟಿ ಬದುಕು ಕಟ್ಟಲ್ಪಡಬೇಕು ಎಂಬ ಮಹದಾಶಯದೊಂದಿಗೆ ಸಮಾನ ಮನಸ್ಸು, ಸಮಾಜಮುಖೀ ಚಿಂತನೆಯ ಗೆಳೆಯರೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ಪ್ರಸ್ತುತ ಒಂದು ದಿನದ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕರಣವನ್ನು ಹಮ್ಮಿಕೊಂಡಿದ್ದೇವೆ. ಕೆಡಹುವ ಜನರ ಮಧ್ಯೆ ಕಟ್ಟುವ ನಾವೂ ಇದ್ದೇವೆ ಎಂಬ-ವಿನಮ್ಮ ಪ್ರಯತ್ನವಿದು. ಇದು ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು ಸಂಕೀರ್ಣ ನೆಲೆಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಮ್ಮ ಕರುಳು ತುಡಿತದ ಕುರುಹಾಗಿ ನಾವಿದನ್ನು ಈ ನೆಲದ ನೋವಿನ ದಾಖಲೆ ಮಾಡುತ್ತಲೇ ನಲಿವಿನ ಹಾದಿ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದೇವೆ. ಹಾಗೆಂದೇ ಅನನ್ಯವಾದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಡಿ ಹೊಸ ಕಾಣ್ಕೆಯ, ಉತ್ತರದ, ಬಂಧನ ಬಿಡಿಸುವ ಜ್ಞಾನ ಮೀಮಾಂಸೆಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಅಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ಅನುಸಂಧಾನ ಕೈಗೊಂಡಿದ್ದೇವೆ. ನಮ್ಮ ಆಶಯದಂತೆ ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಸಂಲೇಖನಗಳ ಮೂಲಕ ಸಕ್ರಿಯವಾಗಿ ಸ್ಪಂದಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಲೇಖಕರಿಗೂ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಾಪನ ಎಷ್ಟು ಮುಖ್ಯವೋ ಅಧ್ಯಯನಶೀಲತೆಗೂ ಅಷ್ಟೇ ಮಹತ್ವವಿದೆ. ಮುಂದುವರಿದು ಸಂಶೋಧನೆಗೆ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ಧನ ಸಹಾಯ ಆಯೋಗವೂ ಸರ್ಕಾರ ಮತ್ತು ಸರ್ಕಾರೇತರ ವಿವಿಧ ಸಂಘ-ಸಂಸ್ಥೆಗಳೂ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ವಿಶೇಷ ಸವಲತ್ತು-ಸ್ಥಾನಮಾನಗಳನ್ನು ನಿಡುತ್ತಿವೆ. ನಾವೆಲ್ಲ ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತ ಅಧ್ಯಾಪಕರು, ಸಂಶೋಧನಾರ್ಥಿಗಳು ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯದ ಕೊಡಿಯೊಂದಿಗೆ ವರ್ಮಾನದ ಸಂಧಿಗೃತೆಯಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಬದುಕನ್ನು ಹಸನುಗೊಳಿಸಬೇಕಿದೆ.

ಪ್ರಸಕ್ತದ ವಿಷಣ್ಣತೆ, ತವಕ, ತಲ್ಲಣ, ಅತಂಕಗಳನ್ನು ವಿವೇಕದಿಂದ ಎದುರಿಸಿ ನಾವೂ ಮತ್ತು ನಮ್ಮ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳೂ ಇಂದಿನ ಸ್ವರಾತ್ಮಕ ಯುಗಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಸಮಾಜಮುಖಿಯಾಗುವತ್ತ ಅಣಿಗೊಳ್ಳಬೇಕಿದೆ. ನಾವು ಕೇವಲ ಸಮಸ್ಯೆಗಳ ಪಾಲುದಾರರಾದರಷ್ಟೇ ಸಾಲದು. ಪರಿಹಾರ ಮತ್ತು ಪರಿವರ್ತನೆಯ ಕೆಲಸಗಾರರೂ ಆಗಬೇಕಿದೆ. ಇದನ್ನು ನಮ್ಮ ಅಧ್ಯಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳ ಮೂಲಕ ಆಗುಮಾಡುವ ಗುರುತರ ಜವಾಬುದಾರಿ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಮೇಲಿದೆ.

ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲಿನ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ರಚನೆಯೂ ಆರೋಗ್ಯಕರವಾಗಿ ಆಲೋಚಿಸಿದೆ ಎಂದೇ ಭಾವಿಸಿದ್ದೇವೆ. ತುಂಬಾ ಎಚ್ಚರ ಮತ್ತು ಕಾಳಜಿಯೊಂದಿಗೆ ಈ ಸಂಕಲನದ ಸಂರಚನೆಗಳು ಮೂಡಿ ಬಂದಿರುವ ಕಾರಣ, ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಅಭಿನಂದನಾರ್ಹರು. ಪ್ರಸ್ತುತ ಸಮಾಜ ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಸಾವಿರಾರು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ನಾವೆಲ್ಲ ತರಗತಿಯೊಳಗೆ ಶಿಷ್ಟರೊಂದಿಗೂ ಮತ್ತು ಸಮಾಜದೊಳಗೆ ಶ್ರೀ ಸಾಮನ್ಯನೊಂದಿಗೂ ಸೇರಿಕೊಂಡು ನೂರಾರು ಉತ್ತರಗಳನ್ನು ಕಂಡುಕೊಳ್ಳದೇ ಇದ್ದರೆ ಹೇಗೆ? ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಇದೊಂದು ಅರ್ದಪೂರ್ಣ ಚಿಕ್ಕ ಪ್ರಯತ್ನ. ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿದ ತಮಗೆಲ್ಲರಿಗೂ ಆಭಾರಿಗಳಾಗಿದ್ದೇವೆ.

ಸಂಪಾದಕ ಮಂಡಳಿಯ ಪರವಾಗಿ

ಡಾ.ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ, ದಾವಣಗೆರೆ

CONTENT

1. *Prof. N T Mouneswara,
**Prof. G Nagaraju.
Fostering Innovative Ecosystem in Higher Education:
Developing Skill and Innovation 100
2. * Mohamed Riyaz
** Ashok kumar B
The Contemporary Problems & Solutions of Digitization 109
3. Chandrashekhara S.
Feminism and Globalisation 115
4. H. Ramesha
The Beliefs and Traditional Practices in Davanagere District:
A Historical Analysis 120
5. Rahamath G
Religion Minorities and Their Problems 124
6. Prof. Ramesh. P. Chavan
Representation Of Dalit In Rohinton Mistry's *Fine Balance* 129
7. * Prof. Smt. Rajeshwari.S. Hogarti.
** Prof. C.H. Tavargundi. Principal,
Relevance of Rural Tourism in Indian Scenario 133
8. Lakshmana. E.
Growth and Trends in Selected Crops of the Kharif Season
Agricultural Productivity In Karnataka 138
9. Prof. Mahananda.V. Hiremath,
Diasporic Consciousness in Amitav Ghosh's *The Shadow Lines* 144
10. SMT. Sujata H. Kadli
Demonetization: An Analysis of Its Impacts on Indian Economy 149
11. Prof B.V.Enagi
Teaching and Learning English for Students: Problems and Remedies. 154

THE CONTEMPORARY PROBLEMS & SOLUTIONS OF DIGITIZATION

Mohamed Riyaz

Librarian,

A.R.M. First Grade College & P.G. Centre
Davangere

Ashok kumar B

Librarian,

Babasaheb ambedkar degree college
Harihar, Davangere.

Introduction

Until recently, digitization of library materials in many libraries in has been considered a necessity of the future, something that can be done once the financial, human and technological conditions are met. That future time has already come and, in libraries we can already share our own experiences about the process of presenting library collections in a digital format. Those who need to start digitization are mostly interested in the clear definition of the problems that occur during the initial phases of the process and possible solutions for overcoming these problems as much as possible. This paper presents the most common problems for librarians in the process of digitization, as well as some of the possible solutions for overcoming these problems. The dawn of information revolution is considered to be one of the marvels of 20th century. We are living in an information society. In 1990's there has been a revolution in digital library systems Librarian's administrates, publications, authors, IT staff and produces of hardware and software-all seem to have adopted it for their use. Those who need to start digitization are mostly interested in the clear definition of the problems that occur during the initial phases of the process and possible solutions for overcoming these problems as much as possible. This paper presents the most common problems for librarians in the process of digitization, as well as some of the possible solutions for overcoming these problems. Digitization helps in reducing drowsiness and boredom to great extent, digital libraries are quite accessible, reduced barriers of distance, time sickness shared resources, and content delivery. In digital library, collection must be selected, organized made accessible and preserved and digitization provides a solution to traditional library problems such as conservation and remote access to information collection and storage. Digital libraries can provide text, voice graphs and image to the end users timely and boundlessly through the internet. Digital libraries the goal of it is 24x7 services anytime and anywhere. We understand a digital library to be an electronic collection of real or virtual

resources. It is a dynamic store house of digitized information (digital video, e-documents, e-journals, e-print, microform, CDs, DVDs, etc)

What is digitization?

Library is a growing organism: Fifth law of library science by Dr. S R Ranganathan must be willing to adapt to new conditions if it is to meet its good of maximizing, accessibility and exposure while minimizing the users time and effort. The cognitive flexibility, relational communication and non-verbal immediacy communication theories were used for illustration. It also discusses the challenges often encountered during digitization and the implications for planning and policy. Digitization implies conversion of documents and art works into digital images. Digital images here mean electronic copies of documents. Digitization is a process in which materials are converted from the hard copies to electronic copies.

1. Awareness of information which gives the breath of vision
2. Awareness of technology which gives the power to make the visions manifest
3. Awareness of needs proved the insight to use professional skills and talents to greater effect.

1. Need for Digitization

Access: - Digitized content provide the advantage of search over print media

Reduced cost of Handling: - Digitization reduces the costs of handling strong and duplicating paper documents and in some case can reproduce the lost documents

Organization and dissemination:- Digitisation I or electronic images can be indexed and stored in a documents retrieval system

Manuscripts provide authentic records for tracing the cultural, social, political, and economic history of people of a region or a country as such. Manuscripts being organic in nature are susceptible to irreversible decay due to passage of time. Digitization helps to preserve precious materials and to reduce wear and tear fragile times. This does not mean however, that digital copies should be seen as are replacement for the original documents. Even after digitization, original documents and artefacts must still be cared. Digitization of manuscripts as means of protecting and documents and artefacts must still be cared.

Digitations of manuscripts as means of protecting and documenting textual heritage has emerged as an important field in recent times

2. Digitization Problems

- Policy matter regarding digitization
- Physical condition of the materials to be digitized
- Financial issues and implications
- Technical feasibility
- Availability of trained man power
- Selection of methods for digitization
- Time factor
- The extent of sharing the digitized resources
- Retaining/Disposition of original documents
- Lack of Technical Staff

Data Size

Many of the storage media praised by people all over the world may become less useful only long after they become unreadable. Thus documents digitized and stored in such medial become outdated the maintenance will be more difficult then print media. The changes and improvents of storage medium put serious questions about the future of digitized materials and their alternation

Documents Type

In an age of information explosion and information pollution, librarians are in a dilemma about what type of records is to be digitized and what type of record not to be digitized. The documents i high demand today any become obsolete even tomorrow because of the vast developments in the subject and printing and publishing industry.

Technology Obsolescence

The technology behind digitization is undergoing drastic changes continuously the computer hardware, software, storage media and content formats are undergoing great revolution Digital storage media are always under the threat of above factors while selecting the storage medium technological obsolescence should be taken into consideration

3. Digitization Solutions

Solution the Following faced by libraries in India as for as digitization is concerned and solution

- Building the resource
- Develop improved technology for digitizing analogy materials
- Integrate access to both digital and physical materials
- Provide, more effective and flexible tools for transforming digital content to suit the need of the end users
- Integrate access to both digital and physical materials
- Hardware components
- Printer inkjet, Laser,
- Networking LAN MAN, WAN Internet with high speed connective High power UPS
- Capture Devices: Scanner Cameras Barcode scanner
- Server with high capacity hard disk and clines in LAN
- Software components
- Web designing software Java XML
- SQL server software, Database management software
- Digital Database like Oracle Postage SQL MYSQL operating software LINUX etc.
- Technological Change
- Inadequate finance and Infrastructure
- Information Explosion on the Interne
- Technical architecture

Interactions: -

In this section we will explore some of the implications of these different requirements, focusing on the ways in which they are in conflict. In an attempt to structure this exploration we will consider several dimensions; these are essentially arbitrary but hopefully will be useful.

Role of Library Professional

Librarian need to possess the knowledge in the field of information Technology i.e. Computer networking information analysis interest switching technology, digital resources

and various website. Information is easily available through internet but it is generally into the process and unorganized for. In order to face this problem the library profession and user needs to acquire detailed knowledge about the digital world are as follow

Knowledge of computer

- Knowledge of digitization
- Knowledge of source of electronic information
- Translation skills
- Technique of evaluating the quality of Information
- Compilation and editing skills
- Knowledge of copyright laws

Conclusion

Preservation and conservation of palm leaf manuscripts is one of the important areas which needs much attention. The real challenge today for palm leaf manuscripts libraries is not just handling, preserving and safeguarding cultural heritage and traditional knowledge through ICT applications, but by making it available to the public at large. Beyond doubt future of digital library is bright in India as it is already cited in this paper that information books journals and magazines will be kept in digital form. Digital Library is nothing but an organized collection of digitized materials, accessible entirely from a desktop computer over a network. Librarians will have to equip themselves for capabilities to link with global trends of the ultimate benefits of information seekers. New information created today is already in digital form and may just require conversion to formats appropriate. The task of digitizing the manuscripts will go through a strategic planning process and then be taken as project. It is high time now not only to know and recognize the knowledge imparted in the palm leaf manuscript heritage, but also to utilize it and therefore it should be preserved properly.

References

1. Ramesh Babu, B and Vijay Kiran, A (2001) Towards digitization of church archival materials in India" IN Creation and Management of Digital Resources
2. Samuel J G. (1994) Preservation of palm leaf Manuscripts in Tamil, IFLA Journal 20(3):294-305

3. Koganuramth Muttayya M and Angad, Mallikarjun. Digitisation in an Academic Library: A Success story at Tata Institute of Social Sciences, DESIDOC Journal of Library and Information Technology, Vol 30, No.1 Januray 2010 pp.38-43
4. Bhatt, R .K. (2008) March towards digitization of information resources in India: issues and initiatives. World Digital Libraries, 1(2) 14-164
5. Sharma, S & Arya. S (2006) knowledge Management in Digital era: a challenge to Library professional ILA Bulletin 42(2) 10-13
6. <http://comminfo.rutgers.edu/~lesk/spring06/lis553/Lfutures.pdf>
7. www.ignca.nic.in



ARM COLLEGE DAVANAGERE

ಎಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳು ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಿ ನಿಂತು ಬಿಡುತ್ತವೆ ಎಂಬುವುದು ಕನ್ನಡಿಯಷ್ಟೇ ಸತ್ಯ. ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತರು, ಅರಿವುಳ್ಳವರು, ಬುದ್ಧಿಜೀವಿಗಳಾದವರು ತಮ್ಮ ವೈಚಾರಿಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿಂದ ಬಡವಾಗುತ್ತಿರುವ ಸಮಾಜದ ಎಲ್ಲಾ ರಂಗಗಳ ವೈರುಧ್ಯಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ವಿಜೃಂಭಿಸಿ ತಟಸ್ಥರಾಗುತ್ತಿರುವ ಈ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಷ್ಟೇ ಪ್ರಧಾನವಲ್ಲ; ಉತ್ತರವೂ ಉಸಿರಾಗಬೇಕು. ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟ ಬದುಕು ಕಟ್ಟಲ್ಪಡಬೇಕು, ಕೆಡಮವ ಜನರ ಮಧ್ಯೆ ಕಟ್ಟುವ ನಾವೂ ಇದ್ದೇವೆ ಎಂಬ ವಿನಮ್ರ ಪ್ರಯತ್ನವಿದು. ಇದು ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು ಸಂಕೀರ್ಣ ನೆಲೆಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಮ್ಮ ಕರುಳ ತುಡಿತದ ಕುರುಹಾಗಿ ನಾವಿದನ್ನು ಈ ನೆಲದ ನೋವಿನ ದಾಖಲೆ ಮಾಡುತ್ತಲೇ ನಲಿವಿನ ಹಾದಿ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದೇವೆ. ಹಾಗೆಂದೇ ಅನನ್ಯವಾದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಡಿ ಹೊಸ ಕಾಣ್ಕೆಯ, ಉತ್ತರದ, ಬಂಧನ ಬಿಡಿಸುವ ಜ್ಞಾನ ಮೀಮಾಂಸೆಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಅಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ಅನುಸಂಧಾನ ಕೈಗೊಂಡಿದ್ದೇವೆ. ನಮ್ಮ ಆಶಯದಂತೆ ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಸಂಲೇಖನಗಳ ಮೂಲಕ ಸಕ್ರಿಯವಾಗಿ ಸ್ಪಂದಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಲೇಖಕರಿಗೂ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

-ಪ್ರಕಾಶಕರು

ISBN



9789384534950

ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

Volume-I

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು:

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ

ಪ್ರೊ. ಲಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಶ್ರೀ ಆನಂದಕುಮಾರ ಎಂ. ಜಕ್ಕಣ್ಣವರ

ಶ್ರೀ ಮಂಜುನಾಥಗೌಡ ಶಿ. ಪಾಣಲೆ

ಸಿದ್ಧೇಶ್ವರ ಶ್ರೀ ಪ್ರಕಾಶನ, ವಿಜಯಪುರ

ಬಹುಶಿಷ್ಟೀಯ ಸಂಕಥನ

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA

VOL-I

First Impression: 2017

Copyright © ಸಮಷ್ಟಿ ಫೌಂಡೇಶನ್, ಧಾರವಾಡ.

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

ISBN: 978-93-84534-95-0

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Price: ₹ 500/-

Printed by:

Om Print Point, Dharwad

Published by :

I.S Mujawar, Siddheshwar Shri Prakashana, Vijayapur.

Typeset by :

Mr. Jagadeesh K. Angadi

Sai printers.

Dharwad

95357 13213

CONTENT

1. H A Karibasappa Application of Information Technology in Libraries: An Overview	1
2. * Sadashiva Naik, A. **Praveen, A. N. A Review of Contemporary Problems and Solutions in Library Automation Of First Grade College Libraries in Karnataka	12
3. Vinutha H.G M.Com., M. Phil A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India	18
4. Shantha Naik H Upliftment of Weaker Section	27
5. Smt Anita N. Halamata, Challenges and Solutions of the Vision Digital India	32
6. Boraiah .R.N The Social and Religious System of Vijayanagara Period in Chitradurga District	37
7. *Sunitha.N.M **Dr.B.P.Veersbhadrapa Cost and Returns of Maize Cultivation in Davangere District	40
8. Basavaraj Dammalli ¹ Gururaj Puranik ² Sudheer Rao.K ³ A Comparative Study of Aggression among Batsmen and Bowlers in Cricket	46
9. Ms.Sunada karegar Current Social Problems and Solution.	50
10. Kantharaj H. Chronogical Order in Hiriyur Taluk Inscriptions	55
11. Dr. Hanumatappa K N Social Enterpreneurship and Its Contribution to Rural Development: A Study of Shimoga District.	59

A COMPARATIVE STUDY OF AGGRESSION AMONG BATSMEN AND BOWLERS IN CRICKET

Basavaraj Dammalli¹

Physical Education Director,

A.R.M. First Grade College,

Davanagere, Karnataka

Gururaj Puranik²

Research Scholar,

Kuvempu University,

Shivamogga

Sudheer Rao.K³

Research Scholar,

Kuvempu University,

Shivamogga

Introduction

Aggression is perhaps one of the most important problems in sports today (D.N. Sacks, Y. Petscher, C.T. Stanley, G. Tenenbaum, 2003). Much research has looked at aggressive behaviors in sport, trying to understand the processes underlying such an unethical behavior (B. Kirker, G. Tenenbaum, J. Mattson, 2000; D.E. Stephens, 2001; G. Tenenbaum, E. Stewart, R.N. Singer, J. Duda, 1997). Aggression is a negative personality trait that has been associated with sport participation (L.A. Keler, 2007). The term aggression has been defined by R.A. Baron and D.R. Richardson (1994) as "any form of behavior directed toward the goal of harming or injuring another living being who is motivated to avoid such treatment" (p.7). Aggression is physical or verbal behavior; it is not an attitude or emotion (M.A. Mattesi, 2002).

The word aggression comes from the latin word *aggress*, 'ad' (to or toward)' and *grader* (walk). Literally then the word means to "to walk towards or approach", to move against or to move with intent to hurt or harm. Most psychologist describe aggression in terms of behavior. Aggressive behavior is associated with destructive acts, sexual attacks, prejudiced, speeches, genital activities, drug and alcohol addictions, sports and exercise 'crying' complaining, waging wars and so forth. Most aggression in sport results from frustration. This frustration is the result of various motives being blocked. Those motives which are predominant in sport and which generate aggression when wasted, they revolve around achievement dominance power, recognition, prestige and excellence. If a boy places high incentive value on one or a combination of these motives and the incentive systems are

blocked from attaining or satisfying them, he becomes frustrated. In essence aggression is primarily a learned behavior which is the result of an individual's interaction with his or her social environment over time. Aggression occurs in sports where an athlete's generalized expectancies for the reinforcement for aggressive behaviour are high (e.g.: receiving praise from parents, coaches, peers) and where the reward value outweighs punishment value (e.g.: gaining a tactical and psychological advantage with a personal foul, a yardage penalty in American Football). This is deemed an appropriate time to exhibit aggression.

Cricket is the game where two teams try to score out each other. Batting, Bowling and Fielding are the main skills of the game. The all aspects of game needs aggression but now a days latest popular version of the cricket 20-20 over matches needs much aggression than the other forms of the game. Because every ball is needed to be scored by the batsmen while bowlers has to contain them by accurate line and length. But now a days the major rules supports the batsmen so bowlers needed much aggression in their bowling and contain the batsmen by keeping them quite by their bat. So it was hypothesised that Bowlers will have more aggression level than the Batsmen in Cricket.

Method

For the purpose of the study 80 male Cricket players (40 Batsmen and 40 Bowlers) who participated in T20 Hubli Premier League served as the subjects of the study. The age of the subjects was in the range of 18-35years. In order to accomplish the purpose of the study "Sports Aggression Inventory" (Anand Kumar and P S Shukla) was administered before the match. Sports Aggression Inventory consists of 25 items in which 13 items are keyed "YES" and 12 are keyed "NO". The statements which are keyed "YES" are 1,4,5,6,9,12,14,16,18,21,22,24 and 25 and the statements which are keyed "NO" are 2,3,7,8,10,11,13,17,19,20 and 23. Maximum score for each statement was one. Scores obtained for each statement were added to represent an individual's total score on aggression. To test the difference between Batsmen and Bowlers in aggression level, the data was subjected to Independent Sample t-test.

Results

Presented in table number one mean and standard deviation of Aggression score of Bowlers and Batsmen. It may be observed that Bowlers are having higher mean aggression score than the Batsmen.

Table 1: Mean and Standard deviations of Aggression score of Batsmen and Bowlers.

	N	Mean	Standard Deviation
Batsmen	40	9.62	3.01
Bowlers	40	11.67	2.78

Presented in Table-2 is the summary of t-test between Batsmen and Bowlers. It may be observed that, the t-ratio was significant at 78 degrees of freedom with 0.05 level of significance.

Table 2: Summary of t-test of Aggression Scores of Batsmen and Bowlers.

		t	df	Sig. (2 tailed)	Mean Difference
Aggression Score	Equal variances assumed	-2.995*	78	.004	-2.04710
	Equal variances not assumed	-2.988	68.795	.004	-2.04710

* $\alpha < 0.05$

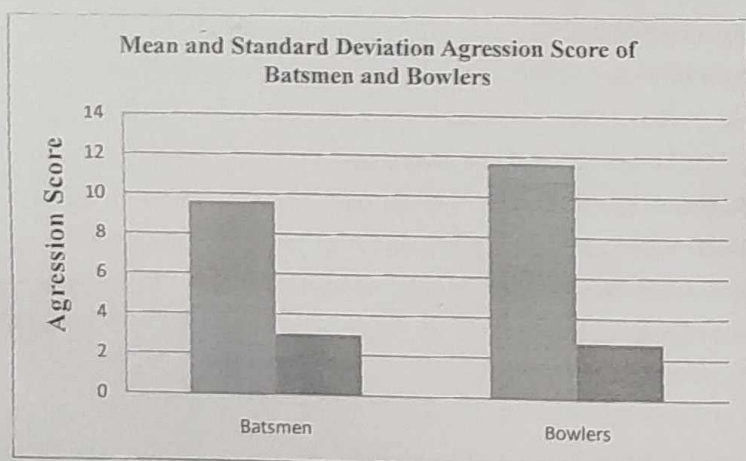


Figure 1: Mean and Standard Deviation Aggression Score of Batsmen and Bowlers

Discussion and Conclusion

It may be observed that in figure 1 mean aggression Score of Bowlers is higher than the Batsmen. As expected Bowlers need to be aggressive than the batsmen because T20 format of the game needs aggressive effort to contain the Batsmen by bowling bouncers and bowling at consistent speed. If we observe the sledging situations at the international level most of the time they were initiated by the bowlers. It may observed that Bowlers doesn't like big hitting for their bowling by batsmen, so after receiving big hit they will react to situation aggressively. So it is therefore concluded that Bowlers are aggressive than the Batsmen in Cricket.

Bibliography

- 1) KIRKER, B., TENENBAUM, G., MATTSON, J., 2000, *An investigation of the dynamics of aggression: direct observations in ice hockey and basketball*. Research Quarterly for Exercise and Sport, 71, 373-386.
- 2) KEELER, L.A., 2007, *The differences in sport aggression, life aggression, and life assertion among adult male and female collision, contact, and non-contact sport athletes*. Journal of Sport Behavior. Vol. 30, No. 1, 57-76.
- 3) MATTESI, M.A., 2002, *The effects of an Aggression Management Training Intervention Program on Controlling Ice Hockey Player Penalty Minutes*. The Thesis of Doctor of Education in Sport Psychology. School of Physical Education. University of West Virginia.
- 4) STEPHENS, D.E., 2001, *Predictors of aggressive tendencies in girls' basketball: an examination of beginning and advanced participants in a summer skills camp*. Research Quarterly for Exercise and Sport, 72, 257-266.
- 5) SACKS, D.N., PETSCHER, Y., STANLEY, C. T., TENENBAUM, G., 2003, *Aggression and violence in sport: Moving beyond the debate*. International Journal of Sport and Exercise Psychology, 1, 167-179.



ARM COLLEGE DAVANAGERE

ಎಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳು ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಿ ನಿಂತು ಬಿಡುತ್ತವೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಕನ್ನಡಿಯಷ್ಟೇ ಸತ್ಯ ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತರು, ಅರಿವುಳ್ಳವರು, ಬುದ್ಧಿಜೀವಿಗಳಾದವರು ತಮ್ಮ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿಂದ ಬಡವಾಗುತ್ತಿರುವ ಸಮಾಜದ ಎಲ್ಲಾ ರಂಗಗಳ ವೈರುಧ್ಯಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ವಿಜೃಂಭಿಸಿ ತಟಸ್ಥರಾಗುತ್ತಿರುವ ಈ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಷ್ಟೇ ಪ್ರಧಾನವಲ್ಲ; ಉತ್ತರವೂ ಉಸಿರಾಗಬೇಕು. ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟ ಬದುಕು ಕಟ್ಟಲ್ಪಡಬೇಕು, ಕೆಡಹುವ ಜನರ ಮಧ್ಯೆ ಕಟ್ಟುವ ನಾವೂ ಇದ್ದೇವೆ ಎಂಬ ವಿನಮ್ರ ಪ್ರಯತ್ನವಿದು. ಇದು ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು ಸಂಕೀರ್ಣ ನೆಲೆಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಮ್ಮ ಕರುಳ ತುಡಿತದ ಕುರುಹಾಗಿ ನಾವಿದನ್ನು ಈ ನೆಲದ ನೋವಿನ ದಾಖಲೆ ಮಾಡುತ್ತಲೇ ನಲಿವಿನ ಹಾದಿ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದೇವೆ. ಹಾಗೆಂದೇ ಅನನ್ಯವಾದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಡಿ ಮೊಸ ಕಾಣೈಯ, ಉತ್ತರದ, ಬಂಧನ ಬಿಡಿಸುವ ಜ್ಞಾನ ಮೀಮಾಂಸೆಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಅಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ಅನುಸಂಧಾನ ಕೈಗೊಂಡಿದ್ದೇವೆ. ನಮ್ಮ ಆಶಯದಂತೆ ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಸಂಲೇಖನಗಳ ಮೂಲಕ ಸಕ್ರಿಯವಾಗಿ ಸ್ಪಂದಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಲೇಖಕರಿಗೂ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

—ಪ್ರಕಾಶಕರು

ISBN



9789384534950